यूको अवध संदेश

लखनऊ अंचल की छमाही पत्रिका, अंक 36 , अप्रैल-सितंबर 2025

यूको बैंक UCO BANK

अंचल कार्यालय लखनऊ,
बी 1/122, विनीत खंड, गोमतीनगर, लखनऊ, उ.प्र. – 226011

गौरव के क्षण

14 सितंबर 2025 को हिंदी दिवस एवं पंचम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में यूको बैंक को पत्रिका श्रेणी में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (द्वितीय) तथा नराकास (बैंक) कोलकाता को नराकास राजभाषा सम्मान(द्वितीय)प्राप्त हुआ, जिसे कार्यपालक निदेशक श्री विजय कुमार निवृत्ति कांबले जी ने श्री अर्जुन सिंह मेघवाल,केन्द्रीय विधि एवं न्याय राज्यमंत्री, श्री दिनेश शर्मा, सांसद राज्य सभा एवं डॉ०आनंद रंगनाथन, वैज्ञानिक एवं लेखक के कर कमलों से प्राप्त किया।

संरक्षक

श्री आशुतोष सिंह
अंचल प्रमुख

मार्गदर्शन

श्रीमती निकिता पाण्डेय
उप अंचल प्रमुख

श्री आलोक कुमार
सहायक महाप्रबंधक

श्री पूर्बोशीष चक्रवर्ती
सहायक महाप्रबंधक

श्री निमेषदीप
सहायक महाप्रबंधक

विशेष सहयोग

श्री सिद्धार्थ तिवारी
मुख्य प्रबंधक

श्री वीरेन्द्र सिहाग
मुख्य प्रबंधक

श्री संतोष कुमार सिन्हा
मुख्य प्रबंधक

संपादन

डॉ शिल्पी शुक्ला

वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा

विषय सूची

माननीय गृह मंत्री भारत सरकार का संदेश

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक निदेशक का संदेश

अंचल प्रमुख की कलम से

संपादकीय

लेख - व्यवसाय का आधार: ग्राहक सेवा की उत्कृष्टता : श्रीमती निकीता पाण्डेय

लेख- सूचना प्रौद्योगिकी के युग में राजभाषा हिंदी : श्रीमती तनुश्री वरुण

भाषायी क्षेत्र का वर्गीकरण

संस्मरण- यादों के झरोखे से- यूको बैंक में मेरा पहला दिन: श्रीमती स्वाति सिन्हा

कविता – मेरे महादेव : सुश्री प्राची श्रीवास्तव

लेख- जलवायु परिवर्तन की चुनौतियां और समाधान : श्रीमती सारिका गुप्ता

कहानी – संतोषी : डॉ०शिल्पी शुक्ला

लेख – बैंकों में हिंदी का प्रयोग और सफल नवाचार : श्री विरेन्द्र सिहाग

अनुच्छेद 343- संघ की राजभाषा

कविता – भिक्षुक : श्री अंशुमन मिश्रा

लेख – कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन : सुश्री लिपि प्रकाश

लेख- हरित वित्तीयन और भारतीय अर्थव्यवस्था : सुश्री छवि सक्सेना

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति लखनऊ –उपलब्धियां

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति हरदोई –उपलब्धियां

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति सीतापुर –उपलब्धियां

हिंदी कार्यशाला

उपयोगी टिप्पणियां

उपनिदेशक कार्यान्वयन उत्तरी क्षेत्र2 द्वारा राजभाषायी निरीक्षण

लेख- डिजीटल पारिस्थितिकी तंत्र में इंटरप्राइज़ फ्राड रिस्कमैनेजमेंट और कृत्रिम बुद्धिमत्ता- श्री सौरभ प्रजापति

कविता- क्षणभंगुरता : श्री अविनाश तिवारी

व्यवसाय सितंबर 2025

प्रधान कार्यालय द्वारा राजभाषा निरीक्षण

हिंदी पखवाड़ा 2025

बैंकिंग शब्दावली

यूको कान्ट्रेक्टर योजना

रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार है।

सत्यमेव जयते

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

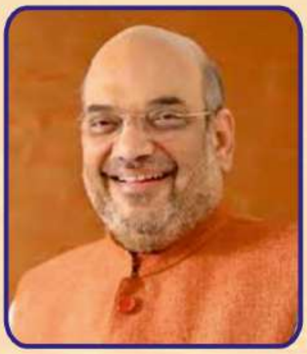

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्‌भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

एक टीम, एक स्वप्न

हमारा विजन

"एक ऐसी विश्वस्तरीय वित्तीय संस्था के रूप में आना जो अत्यंत विश्वस्त और प्रशंसनीय हो तथा जिसे प्रत्येक ग्राहक व निवेशक बहुत पसंद करते हों एवं जिस पर उसके कर्मचारियों को गर्व हो।"

Our Vision

"To emerge as the most trusted, admired and sought-after world class financial institution and to be the most preferred destination for every customer and investor and place of pride for its employees."

यूको बैंक UCO BANK
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

हमारा मिशन

"कर्मचारियों की कार्यकुशलता बढ़ाकर उनकी प्रभावी सहभागिता से एवं नवीनतम प्रौद्योगिकी के प्रयोग द्वारा कारबार तथा लाभप्रदता में सतत वृद्धि करते हुए एवं सर्वोत्तम ग्राहक सेवा प्रदान कर सामाजिक-आर्थिक दायित्वों को पूरा करने हेतु सर्वोत्कृष्ट श्रेणी का बैंक कहलाना।"

Our Mission

"To be a top class Bank to achieve sustained growth of business and profitability, fulfilling socio-economic obligations, excellence in customer service; through upgradation of skills of staff and their effective participation and making use of state-of-the-art technology."

यूको बैंक UCO BANK
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

आवरण पृष्ठ के बारे में– आवरण पृष्ठ में ध्यानावस्था में महात्मा बुद्ध का चित्र खुदरा ऋण हब की वरिष्ठ प्रबंधक श्रीमती गायत्री देवी द्वारा बनाया गया है।

महात्मा बुद्ध के चित्र के पीछे आस्था, ज्ञान और शांति का जीवंत प्रतीक बोधि वृक्ष अंकित है। महात्मा बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के उपरांत बोधि वृक्ष के नीचे ही लगभग सात दिनों तक ध्यान किया था।

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय यूकोजन,
आप सभी को हिंदी दिवस - 2025 की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ!

भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि वह जीवंत चेतना है जो राष्ट्र की आत्मा को स्वर देती है। इसी चेतना की स्वर्णिम उपलब्धि के रूप में राजभाषा हिंदी हमारी संस्कृति, संस्कार और अस्मिता को आलोकित करते हुए जन-जन के हृदय को जोड़ने वाला वह सेतु बन चुका है, जिस पर भारत विकास के सोपानों को सहजता से पार कर रहा है। हिंदी ने अपनी परंपराओं को सँजोते हुए अन्य भाषाओं के रत्नों को आत्मसात कर एक बहुरंगी गंगा-जमुनी संस्कृति का निर्माण किया है।

संघ की राजभाषा नीति के प्रति यूको बैंक की प्रतिबद्धता एक सुदीर्घ साधना है, जो वर्ष 1974 से निरंतर हिंदी के अनुशासित अनुपालन में अभिव्यक्त हो रही है। भारत सरकार द्वारा राजभाषा कीर्ति पुरस्कारों से प्रतिवर्ष सम्मानित होना हमारी उसी निष्ठा का प्रमाण है। हमें गर्व है कि इस वर्ष हमारी हिंदी गृह पत्रिका "यूको अनुगूँज" को 'ग' क्षेत्र की सर्वोत्कृष्ट पत्रिका के रूप में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (द्वितीय) तथा नराकास (बैंक) कोलकाता को नराकास राजभाषा सम्मान (द्वितीय) से अलंकृत किया गया है। साथ ही, हमारे 8 नराकासों में से 6 नराकासों का उत्कृष्ट प्रदर्शन, यूको बैंक की सामूहिक भाषायी चेतना का दर्पण है। इन विजयी नराकासों के अध्यक्षों एवं सदस्य सचिवों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इस उपलब्धि को समस्त यूकोजन को समर्पित करता हूँ, जिन्होंने हिंदी को केवल भाषा नहीं, कार्य संस्कृति का अभिन्न अंग बनाने में महती भूमिका निभाई है।

राजभाषा हिंदी केवल कार्य की भाषा नहीं, हमारी आत्मा की अभिव्यक्ति है। यूको बैंक परिवार का प्रत्येक सदस्य इसके अनुपालन में पूर्ण समर्पण और तन्मयता से जुड़ा है। प्रेरणा, प्रोत्साहन और पुरस्कार के माध्यम से हम न केवल हिंदी को कार्यालयीन जीवन में सहज बना रहे हैं, बल्कि तकनीकी नवाचारों के साथ उसे आधुनिक कार्य संस्कृति में भी आत्मसात कर चुके हैं। हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर मेरी यह अपेक्षा है कि सभी कार्मिक **हिंदी को केवल नियम नहीं, नियमित व्यवहार बनाएं**, क्योंकि हिंदी का सम्मान, राष्ट्र का सम्मान है।

हिंदी को जनमानस की भाषा बनाने के लिए हमें दृढ़-संकल्प होकर कार्य करना होगा। यह सिर्फ सरकारी कार्यालयों की भाषा नहीं बनें अपितु हमारे देश की आम जनता के लिए **सरल, सुलभ और सुग्राही** भाषा बनें। इसके लिए हमें न केवल हिंदी को अपनाना है, बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति भी सम्मान और जिज्ञासा बनाए रखनी होगी। जब हम भाषाएँ सीखते हैं, तो संस्कृति से संवाद, सभ्यता से साक्षात्कार और समाज से आत्मीयता स्वतः जुड़ जाती है। जब हम भाषाओं का सम्मान करते हैं, तो हम संबंधों का विस्तार करते हैं और यही शक्ति भारत को एकसूत्र में पिरोती है।

हिंदी दिवस-2025 के इस पावन अवसर पर हम सभी यह संकल्प लें कि कार्यालय का प्रत्येक कार्य राजभाषा हिंदी में पूर्ण तन्मयता और निष्ठा के साथ संपन्न करें। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित वार्षिक कार्यक्रम का अक्षरशः अनुपालन हमारी भाषायी प्रतिबद्धता का प्रतीक बने। प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से हम न केवल प्रतिभा को मंच देंगे, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रति उत्साह, प्रेरणा और सकारात्मकता का वातावरण भी निर्मित करेंगे। आइए, हम सब मिलकर इसे अपने कर्म की भाषा बनाएं, हृदय से हिंदी अपनाएँ — यही सच्चा राष्ट्र सम्मान है।

(अश्वनी कुमार)
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

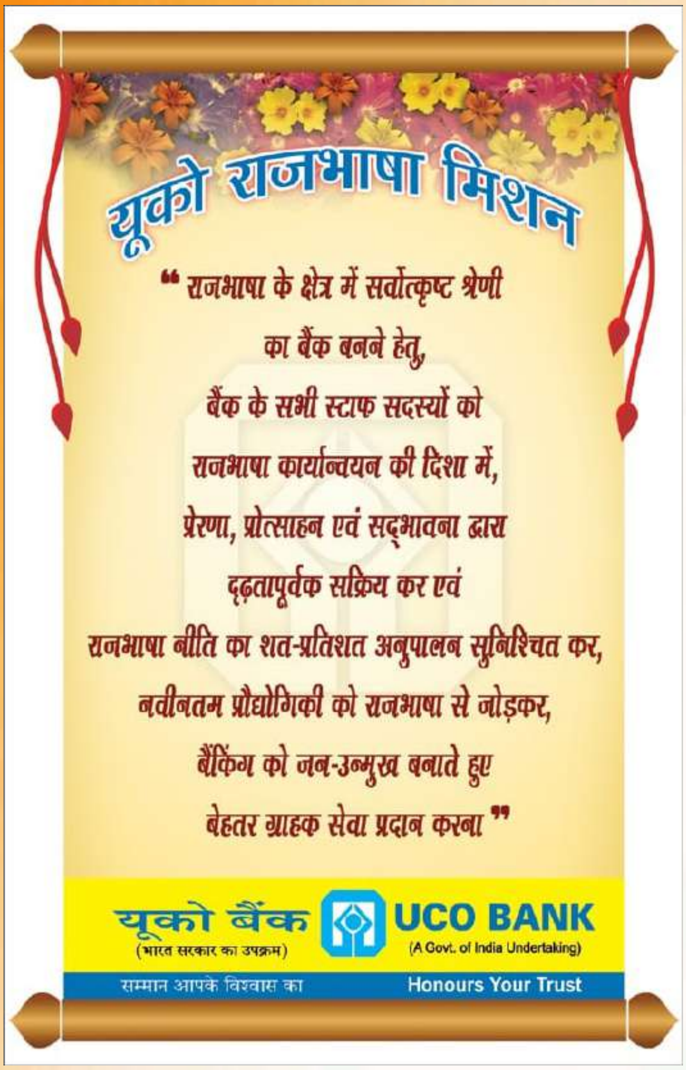

अनुच्छेद 351

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

अंचल प्रमुख की कलम से....

प्रिय साथियो,

आप सभी को नमस्कार,

अंचल की छमाही पत्रिका 'अवध संदेश' के माध्यम से आपको संबोधित करते हुए मुझे खुशी हो रही है। हमारे बैंक की गृह पत्रिका 'अनुगूंज' को गृह मंत्रालय द्वारा पत्रिका श्रेणी में 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' (द्वितीय) प्राप्त होने पर बहुत-बहुत बधाई।

आरपीएल की स्वर्णिम सफलता आपकी टीम भावना, कार्य के प्रति आपकी समर्पण भावना का परिचायक है। आप सभी को बहुत बहुत बधाई। जिस प्रकार का जोश आपने आरपीएल जीतने के लिए दिखाया वह अनुकरणीय है।

वर्तमान वित्तीय वर्ष बहुत तेज़ी से अपनी समाप्ति की ओर अग्रसर है। विभिन्न मानदंड़ों के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हमें युद्धस्तर पर कार्य करने की आवश्यकता है। व्यवसाय के सभी पक्षों की ओर हमें समान रूप से ध्यान देना है। आगामी अवधि में जमा संग्रह, अग्रिम विस्तार, प्राथमिकता क्षेत्र ऋण, सरकारी योजनाओं जैसे वित्तीय समावेशन, सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ, गैर-निष्पादित आस्तियों में कमी, तथा वसूली में प्रगति जैसे विविध लक्ष्यों की समयबद्ध प्राप्ति पर विशेष ध्यान दिया जाना अपेक्षित है। साथ ही, ग्राहक सेवा की गुणवत्ता में निरंतर सुधार एवं नए ग्राहकों के जुड़ाव को प्राथमिकता दें।

बैंक के डिजीटल उत्पादों के बारे में ग्राहकों को बताएं और उन्हें डिजीटल माध्यमों से जोड़ें। बैंक द्वारा चलाए जा रहे '#यूकोगोज़डिजीटल' पर हमें विशेष रूप से ध्यान देना होगा। एसटीपी के माध्यम से ऋण प्रक्रिया को अधिकतम करना होगा। हमें यह सुनिश्चित करना है कि अधिकतम ऋण विशेषकर कार ऋण, व्यक्तिगत ऋण आदि मैन्युअल प्रक्रिया के बजाय एसटीपी (स्ट्रेट थ्रू प्रोसेसिंग) के माध्यम से संसाधित हों।

व्यवसाय के सभी क्षेत्रों के साथ ही साथ राजभाषा के प्रगामी प्रयोग पर भी ध्यान दें। राजभाषा हिंदी के लिए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहें।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी अपने अनुभव, लगन एवं प्रतिबद्धता के माध्यम से निर्धारित लक्ष्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त करेंगे और अंचल के प्रदर्शन को नई ऊँचाइयों तक ले जाएँगे।

शुभकामनाओ सहित ।

आशुतोष सिंह

उपमहाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख

संपादकीय

आप सभी को नमस्कार,

आप सभी को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं।

हमारे अंचल की छमाही पत्रिका 'यूको अवध संदेश' आपके समक्ष है। यह पत्रिका आप सभी के सम्मिलित प्रयासों का प्रतिफल है।

यह हम सभी के लिए प्रसन्नता की बात है कि हमारे बैंक की गृह पत्रिका 'अनुगूंज' को गृह मंत्रालय द्वारा पत्रिकाओं की श्रेणी में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (द्वितीय) प्राप्त हुआ है । आप सभी को इसके लिए बधाई ।

पत्रिका के इस अंक में बैंकिंग, सामाजिक विषयों पर लेख, कविताएं, कहानी, संस्मरण स्टाफ सदस्यों द्वारा बनाए गए चित्र सम्मिलित हैं। आवरण पृष्ठ पर श्रीमती गायत्री देवी द्वारा बनाया गया चित्र पत्रिका के सौन्दर्य में वृद्धि कर रहा है। इसी प्रकार 'मेरे महादेव' कविता में दिखाई दे रहा चित्र सुश्री प्राची श्रीवास्तव के द्वारा ही बनाया गया है। आप द्वारा पत्रिका में प्रकाशनार्थ दी गई सामग्री राजभाषा के प्रति आपकी गहरी रुचि को दर्शाती है। मुझे पूरा विश्वास है कि आप इसी प्रकार से पत्रिका को रचनात्मक सहयोग देते रहेंगे।

पत्रिका के इस नवीनतम अंक में सितंबर 2025 तिमाही में व्यवसाय के विभिन्न मानदंडों में शीर्ष पांच शाखाओं के आंकड़े प्रदर्शित किए गए हैं। शीर्ष पर पहुंचने वाली शाखाओं के लिए शीर्ष पर बने रहने और अन्य शाखाओं के लिए शीर्ष पर पहुंचने की चुनौती है। इसके साथ ही हमारे सामने राजभाषा हिंदी के लक्ष्य भी है। हमारी कुछ शाखाएं राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग में अच्छा कार्य कर रहीं है। हमारी हरदोई शाखा को वर्ष 2024-25 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए नराकास राजभाषा शील्ड, प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ है। सीतापुर शाखा को वर्ष 2024-25 के लिए नराकास राजभाषा उत्कृष्टता पुरस्कार प्राप्त हुआ है। हमारे स्टाफ सदस्यों को नराकास द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। हमें पूरे उत्साह से यह क्रम जारी रखना है। समवेत प्रयासों से हम अपने सभी लक्ष्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त करेंगे।

शुभकामनाओ सहित।

डॉ०शिल्पी शुक्ला

वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा

लेख

व्यवसाय का आधार : ग्राहक सेवा की उत्कृष्टता

श्रीमती निकिता पाण्डेय
उप अंचल प्रमुख लखनऊ

ग्राहक सेवा न केवल बैंकिंग अपितु प्रत्येक व्यवसाय की रीढ़ है। आज बाज़ारवाद के दौर में ग्राहक ही सर्वोपरि है और ग्राहक ही वो केन्द्र बिंदु है जिसके लिए और जिसके चारों ओर किसी भी व्यवसाय का तानाबाना बुना जाता है। आज बैंकों द्वारा दी जा रही सेवाएं ग्राहक केन्द्रित हैं।

ग्राहक सेवा से अभिप्राय ग्राहकों की आवश्यकताओं को समझना, उनकी शंकाओं का समाधान करना, उन्हें एक अच्छा अनुभव प्रदान करना है इसके लिए ग्राहकों की अपेक्षानुरुप उत्पाद, मज़बूत शिकायत निवारण तंत्र और अग्रिम पंक्ति के स्टाफ की भूमिका अहम होती है। समय के साथ बदलती अपेक्षा के अनुसार ग्राहक सेवा का स्वरूप भी बदला है। आज ग्राहक को समाधान तुरंत चाहिए। वे व्यक्तिगत रूप से शाखा में उपस्थित होने के स्थान पर डिजीटल माध्यम से अपने सभी कार्य एक ही स्थान से पूरे कर लेना चाहते हैं। उत्कृष्ट ग्राहक सेवा न केवल ग्राहक को अपने साथ बनाए रखने में सहायक होती है, बल्कि संगठन की छवि और विश्वसनीयता भी बढ़ाती है।

आधुनिक व्यवसायिक वातावरण में ग्राहक सेवा का दायरा और प्रभाव अधिक व्यापक हो गया है। पहले व्यापार मुख्यतः प्रत्यक्ष संपर्क पर आधारित होता था, जहाँ विक्रेता और खरीदार के बीच व्यक्तिगत संबंध होते थे। आज के डिजिटल युग में ग्राहक सेवा टेलीफोन, ई-मेल, सोशल मीडिया, चैटबॉट और मोबाइल ऐप्स जैसे विभिन्न माध्यमों से भी प्रदान की जाती है। इन सभी माध्यमों का उद्देश्य एक ही है—ग्राहक को संतुष्ट करना और उसके अनुभव को सकारात्मक बनाना। ग्राहक किसी भी संस्था के लिए प्रचार का माध्यम भी होता है। एक संतुष्ट ग्राहक अन्य ग्राहकों तक पहुंचने के लिए सेतु का कार्य करता है। बैंक / संस्था के लिए संभावित ग्राहकों की खोज को आसान बनाता है। सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव में ग्राहक की एक-एक टिप्पणी बैंक/संस्था के लिए अहम है। इससे उसकी अच्छी छवि का निर्माण भी हो सकता है और उसकी छवि थोड़ी सी ही गलती से धूमिल भी हो सकती है ।ग्राहक सेवा की गुणवत्ता कई तत्वों पर निर्भर करती है-

ग्राहक के साथ प्रभावी संचार और नियमित संपर्क – किसी भी बैंक/ संस्था के कर्मचारियों का व्यवहार और वार्तालाप का तरीका, ग्राहक के प्रति सहानुभूति भरा व्यवहार, स्थितियों और समस्याओं को समझने व तुरंत निस्तारण करने की क्षमता अच्छी ग्राहक सेवा के लिए आवश्यक है । ग्राहक अपनी समस्या का केवल समाधान ही नहीं चाहता, बल्कि यह भी चाहता है कि उसकी बात को ध्यान से सुना जाए और उसे महत्त्व दिया जाए। इसी कारण, प्रभावी संचार कौशल ग्राहक सेवा का एक अनिवार्य अंग है। ग्राहकों के साथ नियमित संपर्क उन्हें बैंक/संस्था से जोड़े रखने के लिए कारगर साबित होता है।

समयबद्धता – आज ग्राहक कम समय में समाधान की अपेक्षा करता है अत: ग्राहकों की आवश्यकतानुरूप समस्या का समाधान यथाशीघ्र किया जाए। इसमें आधुनिक तकनीक, महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आज कल सभी बैंकों/संस्थाओं का मज़बूत शिकायत निवारण तंत्र है। जिसमें ग्राहक आसानी से अपनी शिकायतों को पंजीकृत कर उसकी प्रगति पर नज़र रख सकते हैं। चैट्बाट्स की सहायता से ग्राहकों को उनके प्रश्नों के उत्तर तुरंत मिल जाते हैं। बैंकों के मोबाइल बैंकिंग ऐप और ई-बैंकिंग 24X7 निर्बाध बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध करवाती हैं।

विश्वसनीयता और पारदर्शिता - ग्राहक ऐसी संस्था पर अधिक विश्वास करता हैं जो ईमानदारी से जानकारी प्रदान करे और उसकी नीतियों में पारदर्शिता हो। ग्राहकों को उचित समाधान देना ग्राहक का भरोसा बनाए रखने में सहायक होता है। इसमें उत्पाद की गुणवत्ता, सेवा की सहजता, उपयोग में सरलता और भावनात्मक जुड़ाव सभी शामिल होते हैं। जब ग्राहक के लिए सेवाओं के उपयोग में किसी प्रकार की जटिलता नहीं होती है और आवश्यकता पर कर्मचारी उसे पूरा सहयोग प्रदान करते हैं तो वह बैंक / संस्था से जुड़ाव अनुभव करने लगता है।

ग्राहक सेवा किसी भी व्यवसाय का आधार है, उसकी आत्मा है। उत्कृष्ट ग्राहक सेवा न केवल व्यवसायिक सफलता का मार्ग प्रशस्त करती है, बल्कि ग्राहकों के जीवन में भी सकारात्मक प्रभाव छोड़ती है। जो संगठन ग्राहक सेवा को प्राथमिकता देते हैं, वही दीर्घकाल में सफलता प्राप्त करते हैं इसलिए यह बहुत जरूरी हो जाता है कि उत्कृष्ट ग्राहक सेवा को हम अपनी कार्य संस्कृति का हिस्सा बनाएं।

लेख

सूचना प्रौद्योगिकी के युग में राजभाषा हिंदी

श्रीमती तनुश्री वर्मा

वरिष्ठ प्रबंधक, अंचल कार्यालय

मनुष्य के इतिहास में संचार और भाषा का महत्व अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। भाषा केवल संवाद का साधन ही नहीं, बल्कि संस्कृति, विचार, ज्ञान और पहचान का साधन भी है। भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र में हिंदी का स्थान विशेष है क्योंकि यह न केवल देश की राजभाषा है, बल्कि करोड़ों भारतीयों की मातृभाषा भी है। आज जब दुनिया सूचना प्रौद्योगिकी के युग में प्रवेश कर चुकी है, तब भाषा के प्रयोग, विकास और प्रभाव का दायरा पहले से कहीं अधिक व्यापक हो गया है। यह युग डिजिटल तकनीक, इंटरनेट, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, सोशल मीडिया, मोबाइल एप्लिकेशन और ऑनलाइन संचार का युग है। ऐसे समय में हिंदी की भूमिका, उसकी चुनौतियाँ और संभावनाएँ अत्यंत महत्वपूर्णहैं।

हिंदी का ऐतिहासिक और संवैधानिक आधार

हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा स्वीकृत किया गया। संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार केंद्र सरकार के आधिकारिक कार्यों में हिंदी (देवनागरी लिपि) का प्रयोग होना चाहिए। 1953 से हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है ताकि हिंदी के प्रचार और प्रसार को प्रोत्साहित किया जा सके। हिंदी केवल सरकारी कार्यों तक सीमित नहीं है; यह साहित्य, पत्रकारिता, फिल्म, रेडियो, टेलीविज़न और अब डिजिटल माध्यमों के जरिए जन-जन तक पहुँचने वाली भाषा है। जन

सूचना प्रौद्योगिकी का विस्तार सूचना प्रौद्योगिकी ने 21वीं सदी को डिजिटल युग में बदल दिया है। इंटरनेट, कंप्यूटर, स्मार्टफोन, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, ई-गवर्नेंस, ई-कॉमर्स, डिजिटल पेमेंट, वर्चुअल शिक्षा और ऑनलाइन मनोरंजन जैसे क्षेत्रों में तकनीक ने जीवन के हर पहलू को छू लिया है। आज शिक्षा से लेकर चिकित्सा, व्यापार, कृषि और प्रशासन तक हर क्षेत्र डिजिटल हो चुका है। इस डिजिटल क्रांति ने भाषाओं के प्रयोग को भी बदल दिया है। अब संचार केवल कागज़ पर नहीं बल्कि स्क्रीन पर हो रहा है। ऐसे में हिंदी को अपनी जगह बनाए रखने के लिए तकनीकी रूप से सक्षम होना अनिवार्य है।

सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी की वर्तमान स्थिति

1. **इंटरनेट और सोशल मीडिया पर हिंदी:** इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की दृष्टि से हिंदी दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी भाषा बन चुकी है। गूगल, फेसबुक, यूट्यूब, इंस्टाग्राम, ट्विटर (अब X) और व्हाट्सऐप जैसे प्लेटफॉर्म पर हिंदी सामग्री की माँग लगातार बढ़ रही है। गूगल की एक रिपोर्ट के अनुसार भारतीय भाषाओं में कंटेंट की खपत अंग्रेज़ी की तुलना में कई गुना तेजी से बढ़ रही है।
2. **सर्च इंजन और सॉफ्टवेयर में हिंदी:** गूगल, बिंग, याहू जैसे सर्च इंजनों पर हिंदी कीबोर्ड, वॉयस सर्च और ट्रांसलेशन की सुविधाओं ने इसके प्रयोग को आसान बना दिया है। गूगल ट्रांसलेट, माइक्रोसॉफ्ट ट्रांसलेटर और चैटबॉट्स जैसी सेवाएँ हिंदी को वैश्विक स्तर पर पहुँचा रही हैं।

3. **ई-गवर्नेंस और सरकारी पोर्टल:** भारत सरकार के अधिकांश डिजिटल पोर्टलों पर हिंदी में सेवाएँ उपलब्ध हैं। आधार, पासपोर्ट, रेल टिकट, ऑनलाइन बैंकिंग, आयकर विभाग, पीएम-किसान योजना जैसी सेवाओं में हिंदी को प्रमुख स्थान दिया गया है

हिंदी के सामने चुनौतियाँ

1. **तकनीकी शब्दावली की कमी:**

कंप्यूटर, विज्ञान और प्रौद्योगिकी से जुड़ी हिंदी शब्दावली सीमित है। कई बार जटिल अंग्रेज़ी शब्दों के शुद्ध हिंदी अनुवाद कठिन और अप्रचलित होने के कारण लोग अंग्रेज़ी का प्रयोग ही अधिक करते हैं।

2. **मानकीकरण की समस्या:**

हिंदी के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग बोलियाँ और उच्चारण हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर एकरूपता न होने से सामग्री की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

3. **अंग्रेज़ी का प्रभुत्व:**

तकनीक की प्रारंभिक भाषा अंग्रेज़ी रही है। सॉफ्टवेयर, कोडिंग, प्रोग्रामिंग और डिजिटल टूल्स में अंग्रेज़ी का वर्चस्व अब भी कायम है। कई युवा पेशेवर अंग्रेज़ी को ही आधुनिकता और अवसर का प्रतीक मानते हैं।

4. **अनुवाद की गुणवत्ता:**

मशीन ट्रांसलेशन और स्वचालित हिंदी अनुवाद अभी भी पूरी तरह सटीक नहीं हैं। इससे सरकारी या व्यावसायिक कार्यों में त्रुटियों की संभावना बनी रहती है।

5. **डिजिटल साक्षरता का अंतर**

ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता की कमी हिंदी के डिजिटल विकास में बाधा बनती है। हिंदी भाषी जनसंख्या का बड़ा हिस्सा अभी भी तकनीक के उपयोग में पीछे है।

सूचना प्रौद्योगिकी हिंदी के लिए असीमित अवसर लेकर आई है:

1. **स्थानीय भाषा में कंटेंट की बढ़ती माँग:**

भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या 80 करोड़ से अधिक है, जिनमें अधिकांश लोग हिंदी भाषी हैं। मनोरंजन, शिक्षा, समाचार और सोशल मीडिया में हिंदी कंटेंट की लोकप्रियता तेजी से बढ़ रही है।

2. **कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी:**

वॉयस असिस्टेंट जैसे गूगल असिस्टेंट, एलेक्सा और सिरी में हिंदी का प्रयोग दर्शाता है कि हिंदी कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में भी अपनी जगह बना रही है।

3.**ई-कॉमर्स और डिजिटल मार्केटिंग:**

अमेज़न, फ्लिपकार्ट, मिंत्रा जैसे प्लेटफॉर्म हिंदी में सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। हिंदी में विज्ञापन और उत्पाद विवरण ग्राहकों को जोड़ने का प्रभावी साधन बन रहे हैं।

4. **स्टार्टअप और लोकल ऐप्स:**

अनेक भारतीय स्टार्टअप जैसे कू शेयरचैट, डेलीहंट और क्विज़ ऐप्स ने हिंदी को प्राथमिक भाषा के रूप में अपनाया है।

5. **ऑनलाइन शिक्षा और रोजगार**:

डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी माध्यम में शिक्षा, प्रशिक्षण और रोजगार की नई संभावनाएँ खुल रही हैं। इससे हिंदी भाषी युवाओं को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

हिंदी के विकास के लिए सुझाव

1.**तकनीकी शब्दावली का विस्तार**:

विज्ञान और प्रौद्योगिकी से जुड़े शब्दों के सरल और प्रचलित हिंदी विकल्प विकसित किए जाएँ।

2. **सॉफ्टवेयर और ऐप डेवलपमेंट में हिंदी को बढ़ावा:**

सरकारी और निजी क्षेत्र को हिंदी आधारित एप्लिकेशन, गेम्स, और टूल्स तैयार करने चाहिए।

3.**डिजिटल शिक्षा को प्रोत्साहन:**

ग्रामीण और अर्धशहरी क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता अभियान चलाकर हिंदी माध्यम की शिक्षा को मजबूत किया जाए।

4. **मशीन ट्रांसलेशन और एआई अनुसंधान**:

हिंदी के लिए उन्नत अनुवाद और वॉयस रिकग्निशन तकनीक विकसित करने पर निवेश बढ़ाया जाए।

5 . **सरकारी नीतियों का सख्त क्रियान्वयन:** केंद्र और राज्य सरकारों को राजभाषा नियमों का पालन सुनिश्चित करते हुए डिजिटल सेवाओं में हिंदी को प्राथमिकता देनीचाहिए।

सूचना प्रौद्योगिकी ने दुनिया को एक डिजिटल गाँव में बदल दिया है। इस युग में भाषा केवल संवाद का साधन नहीं, बल्कि आर्थिक अवसर, सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक सशक्तिकरण का माध्यम बन चुकी है। हिंदी, जो करोड़ों भारतीयों की आत्मा है, इस परिवर्तन के केंद्र में खड़ी है। इंटरनेट पर हिंदी का तेज़ी से बढ़ता प्रसार, सोशल मीडिया पर इसकी लोकप्रियता, ई-गवर्नेंस में इसका उपयोग और डिजिटल शिक्षा में इसकी भूमिका यह सिद्ध करती है कि हिंदी भविष्य की भाषा है।

हालाँकि अंग्रेज़ी का प्रभुत्व और तकनीकी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं, लेकिन अवसरों की व्यापकता कहीं अधिक है। यदि सरकार, तकनीकी विशेषज्ञ, शिक्षाविद और आम नागरिक मिलकर हिंदी को डिजिटल उपकरणों के अनुकूल बनाएँ, तो आने वाले समय में हिंदी केवल भारत ही नहीं बल्कि वैश्विक मंच पर भी सूचना प्रौद्योगिकी की प्रमुख भाषा बन सकती है।

हिंदी केवल हमारी भाषा ही नहीं, अपितु हमारी संस्कृति का आधार है।

भाषायी क्षेत्र का वर्गीकरण

राजभाषा अधिनियम, 1976 और राजभाषा नियमों के अंतर्गत हिंदी के प्रयोग की प्रगति के आधार पर भारत के राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों में बांटा गया है जिससे हिंदी भाषा को बढ़ावा मिले और हिंदी में कामकाज में सुविधा हो।

'क्षेत्र क' - बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र

'क्षेत्र ख' - गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ

'क्षेत्र ग' - कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना,पश्चिम बंगाल, ओडिशा और पूर्वोत्तर राज्य

संस्मरण

यादों के झरोखे से- यूको बैंक में मेरा पहला दिन

श्रीमती स्वाति सिन्हा
प्रबंधक
लविवि द्वितीय परिसर शाखा

पहली जुलाई वर्ष 2014, दिन मंगलवार मेरे जीवन का एक अनोखा और अविस्मरणीय अनुभव बन गया। नौकरी की शुरुआत हर किसी के लिए खास होती है लेकिन मेरे लिए यह अनुभव कई गुना अधिक महत्व रखता है क्योंकि मेरी ज्वाइनिंग वहीं हुई थी जहां मेरी अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की पढ़ाई चल रही थी। मैं अपने पी.जी. के अंतिम सत्र में पहुंच गई थी। इस दौरान जून माह में मुझे मिस यूनिवर्स यूनिवर्सिटी की उपाधि मिली थी उस प्रतियोगिता को जीतना किसी उपलब्धि से कम नहीं था। अगले महीने की ही मुझे नियुक्ति मिली थी जो कि किसी स्वप्न से कम नहीं थी। पढ़ाई पूरी होने से पहले ही कैरियर की राह पर पहला कदम रखना और यूको बैंक में एस०डब्ल्यू०ओ० के पद पर बैंक में ज्वाइन करना मेरे लिए उत्साह और गर्व से भरा हुआ पल था ।

उस सुबह का दृश्य आज भी मेरी स्मृतियों में वैसे ही अंकित है जैसे ताजा रंग किसी स्पष्ट कैनवास पर। सुबह जल्दी उठ, नए कपड़े पहने और दिल में ज़ोरों की धडकनें महसूस हुई। कहीं ना कहीं भीतर यह डर था कि नया माहौल, नई जिम्मेदारियां और नया दर्जा मुझे कैसा लगेगा लेकिन उसी समय मेरे पिताजी ने एक बहुत सरल व गहरी बात कही-‘ आज मंगलवार है और तुम्हारा सौभाग्य है कि लखनऊ विश्वविद्यालय में तुम्हें पहली पोस्टिंग मिली, जिसके ठीक सामने हनुमान सेतु मंदिर है। घर से जल्दी निकल कर सर्वप्रथम अपने आराध्य बजरंगबली का आशीर्वाद लेना मंदिर जरूर जाना। यह लो 1 किलो मिठाई का डिब्बा सबको प्रसाद मिलना चाहिए।’ उनकी यह बात मेरे दिल को छू गई अपने बड़ों और भगवान का आभार प्रकट करना तो माता-पिता ने सदा सिखाया और यह भी बताया कि यह जीवन एक आशीष ही है। वह मिठाई का डिब्बा लेकर निकलने ही वाली थी कि मेरी मां ने दही चीनी खिलाकर कहा –‘ पहले अपना मुंह मीठा कर लो आज का दिन शुभ रहे। जैसे तुम अच्छी छात्र रही हो, वैसे ही ईश्वर एक अच्छी कर्मचारी भी बनाएं सबका आशीर्वाद मिलता रहे।’
मैं मंदिर पहुंची मिठाई के साथ अंदर प्रवेश किया। मंदिर प्रांगण में घंटियों की ध्वनि हवा में गूंजते मंत्र और फूलों की खुशबू ने मेरे मन को शांति और आत्मविश्वास से भर दिया। ऐसा प्रतीत हुआ संभवत: भगवान स्वयं मेरे साथ हैं और मेरी नई यात्रा में मेरा मार्गदर्शन करने आए हैं। पूजा के बाद अपने पिता के परामर्श के अनुसार मैंने यह मिठाई का डिब्बा ले जाकर प्रबंधक महोदय को दिया। ज्वाइनिंग के साथ तब उन्होंने मुस्कुराते हुए उसे स्वीकार किया और फिर पूरे स्टाफ में प्रसाद बांट दिया। उस पल में मेरे पहले दिन की पवित्र और आत्मीय शुरुआत थी।

शाखा के अंदर कदम रखते ही प्रबंधक महोदय ने मुझे औपचारिक रूप से सबसे मिलवाया और बताया कि 16 के स्टाफ में मैं सबसे छोटी हूं सबने बड़े प्यार और अपनेपन से मेरा स्वागत किया। यह मेरे दिल में हमेशा के लिए अंकित हो गया। मैंने अपनी सीट पर बैठते ही देखा कि छात्र-छात्राएं एक -एक करके अपनी छात्रवृत्ति और फीस के लिए खाता खुलवाने आ रहे हैं। उनके चेहरों पर उत्सुकता और मासूमियत थी। उनके समक्ष काउंटर के इस ओर बैठकर मुझे यह एहसास बिल्कुल भी नहीं हुआ कि मैं एक बैंक कर्मचारी हूं और यह ग्राहक। इसकी वजह मुझे ऐसा लग रहा था मानो हम सभी एक ही परिवार के सदस्य हैं। शाखा में आए प्रोफेसरों ने मुझे बड़े आत्मीय भाव से स्वीकार किया। किसी ने औपचारिकता नहीं दिखाई बल्कि सबका व्यवहार सहज और शालीन था।

मेरे अर्थशास्त्र के प्रोफेसर एवं कुछ लाइब्रेरी कर्मचारी मेरा पहला दिन जानकर मुझे मिलने आए और मुझे बधाई दे गए। इस वजह से मेरी सारी घबराहट मिट गई और मैं आत्मविश्वास के साथ काम करने लगी पहले दिन मुझे जो कार्य सौंप गए वह भले ही छोटे-छोटे थे लेकिन उनसे मुझे एक विशेष संतोष महसूस हुआ। धीरे-धीरे समय बीतने लगा और विश्वविद्यालय शाखा मेरे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गई।

हर नए ग्राहक से बातचीत करते समय उनकी समस्याएं सुनते हुए और समाधान बताते हुए मुझे यह एहसास हुआ कि अब मैं एक अलग जिम्मेदारी का हिस्सा हूं। यह केवल एक नौकरी नहीं बल्कि एक सेवा है जहां मैं प्रत्यक्ष रूप से छात्रों, अध्यापकों, ग्राहकों में आम जनता के जीवन में कुछ योगदान दे रही थी । संभवत: इसी सेवा व संतोष के लिए ही मैंने बैंक की सरकारी नौकरी की तैयारी की थी ।

वहां का वातावरण बेहद सुखद एवं प्रेरणादायक था। छात्र फॉर्म भरते हुए मुझसे अपने अनुभव साझा करते और कई बार उनके सवालों में मासूमियत झलकती, वहीं बुजुर्गों, अन्य ग्राहकों का व्यवहार मुझे सिखाता है कि किसी भी नई जगह पर अपनापन देखना कितना जरूरी होता है।

मेरा अधिकतर कार्य नया खाता खुलवाने का था जिसमें सबसे अधिक संख्या छात्रों की थी। धीरे-धीरे मेरा नाम इन बच्चों ने 'मैडम दीदी' रख दिया। बच्चे स्नातक के लिए पंजीकरण करा कर आए थे और मेरा स्नातकोत्तर पूर्ण होने वाला था। जब मैं अपने विभाग जाती तो यह छात्र आकर मुझे नमस्ते करते। वह बैंक की प्रशंसा करते, जिससे मुझे गर्व और संतुष्टि का अनुभव होता।

एक दिन हमारे लखनऊ अंचल के अंचल प्रमुख श्री राकेश हमारी शाखा में आए। उन्होंने कर्मचारियों के बारे में हमारे शाखा प्रबंधक से पूछा तो हमारे शाखा प्रबंधक माता प्रसाद जी ने उनसे कहा कि जिस काउंटर पर हमने मैडम को बैठाया है। उससे पहले हमेशा शिकायत आती थी पर अब लोग मेरे केबिन में तारीफ करने आते हैं तो, सर ऐसा लगता है कि अच्छा हुआ जो मैडम ने इस शाखा में ज्वाइन किया। अंचल प्रमुख सर ने मेरे सर पर हाथ रख कर कहा था 'कीप इट अप आगे बढ़ते रहना' इस बात का स्मरण मुझे सदैव रहता है। मुझे अपना काम पसंद आता रहा तथा नया काम सीखने की उत्सुकता बढ़ती गई।

अगले माह 22 अगस्त को शाखा कर्मचारियों ने मेरा जन्मदिन मनाया। छात्रों ने अगले दो दिन तक मुझे उपहार में पेन, किताबें, उपन्यास तोहफे में दिए। जिनमें लिखा था 'मैडम दीदी'। इन सब अनुभवों ने मुझे यह सिखाया कि किसी भी शुरुआत को जितनी सकारात्मकता और कर्तव्यनिष्ठा से किया जायेगा उतनी वे स्थाई और सुंदर यादों में बदल जाती है। इस शाखा में बिताया गया मेरा समय मेरे करियर की शुरुआत होने के साथ जीवन की सीख भी था। जहां मैंने सीखा कि अपने कार्य को समर्पण और ईमानदारी से करने के साथ मानवीय संवेदनशीलता रखना भी उतना ही आवश्यक हैं।

जब मेरा स्थानांतरण वहां से मेरे निवास के समीप की शाखा में हुआ तो मुझे खुशी थी पर दिल में हल्की सी कसक भी थी क्योंकि अब तक यह जगह मेरा परिवार बन चुकी थी। जिसने मुझे गले लगाया, मुझे स्वीकार किया था। प्रथम श्रेणी की स्नातकोत्तर डिग्री के साथ वहां की शाखा प्रांगण का हर लम्हा, हर स्मृति और हर अनुभव मेरे जीवन को सबसे सुंदर धरोहरों में से एक है।

नौकरी के बारहवें में साल में प्रवेश करके जब भी उस पहले दिन को याद करती हूं तो मंदिर की घटियों की गूंज, मिठाई का डिब्बा बांटने पर छात्रों की मुस्कुराहट और पहले वेतन से समस्त स्टाफ के लिए लंच होटल से मंगवाना और सबके साथ बैठकर लंच करना, गुलाब जामुन का आनंद लेना यह सब अच्छा एकदम ताजा हो जाता है। वह दिन मेरे लिए सदा प्रेरणा स्रोत रहेंगे। यह मुझे याद दिलाता रहेगा कि किसी भी नई यात्रा की शुरुआत अगर श्रद्धा अपनेपन व उत्साह से की जाए तो वह न केवल सफल होती है बल्कि जीवन भर की सुनहरी यादों में बदल जाती है। एक कथन से मैं यादों के झरोखे को कुछ समय के लिए बंद कर रही हूं कि-

आभार व्यक्त करना, एक प्रसन्नचित मन का संयोजन है,
हर दिन को एक आशीर्वाद मानना, हमारे जीवन का प्रयोजन है।

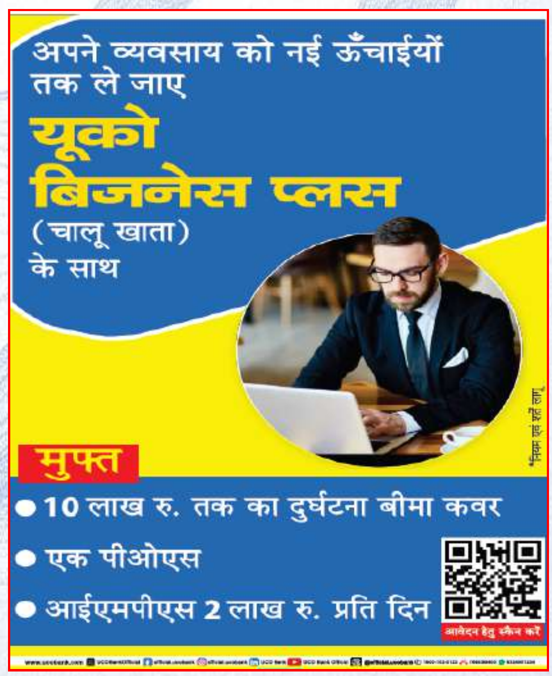

कविता

मेरे महादेव

सुश्री प्राची श्रीवास्तव

सीएसए, अंचल कार्यालय

सुश्री प्राची श्रीवास्तव, सीएसए अंचल कार्यालय

जब मैं परेशान होती थी, तो मेरे महादेव आते थे।
मेरे चारों ओर जैसे, एक सुरक्षा घेरा बनाते थे।
हर पीड़ा को जैसे वह खुद में समा लेते थे।
जब मेरे आँसू बहते थे, तो कई गुना आँसू वह बहाते थे।
महसूस होता कि वह सिर पर हाथ फ़िराते थे।
मेरी राह का हर कांटा हटाया,
धैर्य और साहस का प्रसाद पवाया...
घंटों उनसे बात करके, जब शिवालय से मैं निकलती,
तो लगता कि मुझे वापस बुलाते थे।
मेरी सारी बातें सुन मुझे ऊर्जा से भर जाते थे।
जब फिर शक्तिहीन मैं उन्हें पुकारती,
तब हम फिर वही दोहराते थे।
हर एक पल हाथ थामे रखा मेरा महादेव ने,
दिन से महीने, महीनो से साल लगा मुझे संभालने में।
समय लगा महादेव को भी
मुझे उस मोह-माया के जाल से निकालने में।

फिर महादेव ने मुझे मेरे ईष्ट से मिलवा दिया।
भोले बाबा ने मुझे कृष्ण की शरण में पहुँचा दिया..
जहाँ आँखों से आँसू नहीं, सिर्फ़ प्रेम बहता है।
ना राग, ना द्वेष और ना कोई अपेक्षा...
कृष्णभक्ति रूप में मिली, मुझे सबसे अमूल्य भिक्षा।
ये भक्ति मुझे साहस के उस सागर में ले जाती है..
जहां डर का कोई निशान नहीं सिर्फ करुणा पाई जाती है...!
जहां कृष्ण ही एक विकल्प है... और भक्ति ही एकमात्र पथ...
जहाँ कृष्ण ही हैं, थामते हर जीवन का रथ!!

लेख

जलवायु परिवर्तन चुनौतियां और समाधान

सारिका गुप्ता
विशिष्ट ग्राहक सेवा सहयोगी
कृष्णा नगर शाखा

जितनी पुरानी पृथ्वी की आयु,
उतनी पुरानी है इसकी जलवायु,
जब जब विश्व में हुआ बदलाव,
इसने दिए हैं अत्यंत गहरे घाव,
जलवायु को सहेजना संभालना होगा,
तभी इस धरा पर जीवन मुमकिन होगा।

इस अनंत ब्रह्मांड में ,जिसमें , अनगिनत ग्रह नक्षत्र विद्यमान है, उनमें पृथ्वी पर ऐसा क्या है ? जिसके कारण यहां पर जीवन मुमकिन हो पाया और वह है, धरती की जलवायु । जलवायु ,धरती का वह आवरण है, जिसमें सभी प्रकार का जीवन पैदा हुआ और जीवित रह सकता है। अगर यह जलवायु ना हो या बहुत अधिक रूप में परिवर्तित हो जाए तब उसमें जीवन असंभव हो जाएगा।

जलवायु किसी स्थान के मौसम की दीर्घकालिक औसत स्थिति को दर्शाता है जिसके मुख्य तत्व ,तापमान, वर्षा ,आद्रता, वायुमंडलीय दबाव और हवा की गति है। जलवायु का अध्ययन आमतौर पर 30 वर्षों की अवधि में औसत करके किया जाता है। जलवायु किसी विशेष स्थान या क्षेत्र के लिए परिभाषित होता है और यह एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भिन्न होता है। जलवायु के अध्ययन से हमें यह समझने में मदद मिलती है, कि विभिन्न क्षेत्रों में ,जीवन, कृषि, जल प्रबंधन और आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्र के लिए कैसी नीतियां बनाई जा सकती हैं ?जलवायु मुख्यता पांच प्रकार की होती है -उष्णकटिबंधीय, शुष्क, हल्का मध्य अक्षांश, ठंडा मध्य अक्षांश और ध्रुवीय।

जलवायु परिवर्तन के कुछ प्रमुख कारण है -

1) **जीवाश्म ईंधन का जलना** -कोयला ,पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस के जलने से कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन होता है।

2) **वनों की कटाई-** जलवायु के संतुलन में पेड़ पौधों का एक महत्वपूर्ण योगदान है। पेड़, कार्बन डाइऑक्साइड को सोख लेते हैं लेकिन जब इन्हीं पेड़ों को काट दिया जाता है, तब कार्बन डाइऑक्साइड वातावरण में बढ़ जाती है और ग्रीन हाउस प्रभाव बढ़ जाता है ।

3) कृषि में उर्वरक का अत्यधिक उपयोग नाइट्रस ऑक्साइड का उत्सर्जन करता है।

4)**शहरीकरण-** वनों को कृषि या शहरी क्षेत्र में बदलने से कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन बढ़ जाता है।

5) **परिवहन-** वाहनों और जहाज से निकलने वाला धुआं कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन करता है।

6)**ऊर्जा उत्पादन-** बिजली संयंत्र से भी कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा वातावरण में बढ़ जाती है।

7) **औद्योगिक क्रियाएं** -बढ़ती औद्योगिक क्रियाएं भी जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेदार हैं।

8) **अपशिष्ट** - लैंडफिल और अपशिष्ट उपचार प्रक्रियाओं से मीथेन का उत्सर्जन होता है।

9) **प्रदूषण-** कुछ रसायनों और पदार्थ का उपयोग जलवायु परिवर्तन में अत्यधिक योगदान करता है। आज जिस तरह से प्लास्टिक का उपयोग बढ़ता जा रहा है ,वह भविष्य के लिए एक बहुत बड़ी समस्या बन गया है।

10) **प्राकृतिक कारण-**ज्वालामुखी विस्फोट, बाढ़, सुनामी, सूर्य की गतिविधियां भी जलवायु को प्रभावित करती हैं।

11) **जंगल की आग** भी जलवायु परिवर्तन के लिए एक प्राकृतिक कारण है। जनवरी 2019 से अब तक ब्राजील के अमेज़न वन 74155 बार वन अग्नि का सामना कर चुके हैं। अमेज़न वन में आग लगने की घटना बीते वर्ष से 85% तक बढ़ गई है।

प्राकृतिक कारण को तो रोका नहीं जा सकता है, पर मानवीय गतिविधियों को तो नियंत्रित किया जा सकता है जो कि जलवायु परिवर्तन के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार है-

जलवायु परिवर्तन का पूरी पृथ्वी पर अत्यधिक दुष्प्रभाव पड़ता है.

1. **बढ़ता तापमान-**पृथ्वी का औसत तापमान बढ़ रहा है जिससे बहुत से दुष्प्रभाव और बढ़ती हुई गर्मी को महसूस किया जा सकता है।
2. **पिघलती बर्फ-** ध्रुवीय बर्फ , ग्लेशियर पिघल रहे हैं जिससे समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है जिससे तटीय क्षेत्रों और छोटे द्वीपों के लिए खतरा पैदा होता जा रहा है।
3. **महासागरों में बदलाव-** समुद्र गर्म हो रहे हैं और उनका अमलीकरण बढ़ रहा है जिसका समुद्री पारिस्थितिक तंत्र पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। कई बार समुद्र तट पर बड़ी तादाद में मछलियां और अन्य समुद्री जीव मृत पाए जाते हैं।
4. **मौसम संबंधी घटनाएं-** अब तूफान आना ,सुनामी , बाढ़ ,अत्यधिक गर्मी पड़ना, आम होता जा रहा है और यह सब जलवायु परिवर्तन के कारण ही हो रहा है। कहीं-कहीं पर अत्यधिक ठंड पड़ती है। कहीं-कहीं अत्यधिक बारिश और बादल फटने की खबरें भी आती है जिससे मानव जीवन और संसाधनों पर बुरा प्रभाव पड़ता है।
5. **मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव** -जलवायु परिवर्तन के कारण गर्मी से संबंधित बीमारियां ,सांस संबंधी रोग और अन्य संक्रामक रोगों का खतरा भी बढ़ जाता है।
6. **कृषि पर प्रभाव-**जलवायु परिवर्तन से फसलों की पैदावार भी प्रभावित होती है जिससे खाद्य सुरक्षा और आजीविका पर असर पड़ता है।
7. **जैव विविधता पर प्रभाव-**बढ़ते तापमान और बदलते मौसम के कारण कई प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा भी बढ़ गया है। वनोन्मूलन और मरुस्थलीकरण भी एक बड़ा दुष्प्रभाव है।

इन सब खतरों को देखकर यह कहा जा सकता है की जलवायु परिवर्तन, भविष्य के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है जिससे पूरी मानव जाति के साथ-साथ ,पूरी पृथ्वी पर संकट मंडरा रहा है। यह चुनौती इतनी बड़ी है कि इससे मुकाबला सबको मिलकर और कारगर नीतियां बनाकर ही किया जा सकता है।

जलवायु परिवर्तन को रोकने के उपाय

जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए व्यक्तिगत स्तर और सामूहिक रूप दोनों से ही प्रयास करने होंगे।

1. **ऊर्जा दक्षता-** सबको मिलकर ऊर्जा की खपत को कम करना होगा। बिजली की फिजूल खर्ची को रोकना होगा। कम ऊर्जा खपत वाले उपकरण इस्तेमाल करने चाहिए। सौर ऊर्जा का अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए ,ताकि बिजली की खपत को काम किया जा सके।
2. **परिवहन** -सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना चाहिए। गाड़ियों ,कारों और अन्य पेट्रोल डीजल से चलने वाले वाहनों का उपयोग कम करना चाहिए। इलेक्ट्रिक कार या हाइब्रिड कार का उपयोग करना चाहिए। साइकिल चलाना और पैदल चलना एक अच्छा विकल्प रहेगा। इससे न सिर्फ ईंधन की बचत होगी बल्कि सेहत के लिए भी फायदेमंद रहेगा। अकेले गाड़ी से जाने के बजाय कार पूल करना भी अच्छा रहेगा। आहार-मांस और डेयरी उत्पादों का सेवन कम करना और शाकाहारी आहार अपनाना भी जलवायु परिवर्तन को रोकने में मदद कर सकता है।

4. **कचरा-** कचरे के उत्पादन को कम करना होगा। इसके लिए रीसाइकिल रीयूज रिड्यूस के सिद्धांत पर उपभोग को काम करना होगा । पुनः उपयोग करना होगा और पुनर्चक्रण करना होगा।
5. **पेड़ लगाना-** जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए जो सबसे कारगर उपाय है, वह है पेड़ों को लगाना, जंगलों का संरक्षण करना और उन्हें काटने से बचाना होगा।
6. **नवीकरणीय ऊर्जा-** सौर, पवन और जल विद्युत जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करना होगा।
7. **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग-** जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना होगा । सबको मिलकर एक साथ इस दिशा में कारगर नीतियां बनानी होगी क्योंकि यह किसी एक की समस्या न होकर पूरे विश्व की समस्या है।

वर्तमान में जलवायु परिवर्तन ,मानव जीवन और पृथ्वी के लिए एक विकट चुनौती बन चुकी है।.आंकड़े दर्शाते हैं कि 19वीं सदी के अंत से अब तक, पृथ्वी की सतह का औसत तापमान लगभग 1.62 डिग्री फारेनहाइट बढ़ गया है।

और इसके अतिरिक्त ,पिछली सदी से अब तक समुद्र के जल के स्तर में भी लगभग 8 इंच की बढ़ोतरी दर्ज की गई है और यह अगर इसी तरह चलता रहा तब वह दिन दूर नहीं जब बढ़ते तापमान में मनुष्य जीवन और अन्य प्रजातियों के लिए पृथ्वी पर अस्तित्व संकट में आ जाए। ग्लेशियर के पिघलने से समुद्र स्तर इतना बढ़ जाएगा की पूरी पृथ्वी जलमग्न हो जाएगी।

जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए वैश्विक प्रयास भी किए जा रहे हैं-

1. **जलवायु परिवर्तन पर अंतर सरकारी पैनल** -जलवायु परिवर्तन से संबंधित वैज्ञानिक आकलन करने हेतु संयुक्त राष्ट्र का एक निकाय है, जिसका उद्देश्य, इसके प्रभाव और भविष्य के संभावित जोखिमों के साथ-साथ अनुकूलन तथा जलवायु परिवर्तन को कम करने हेतु नीति निर्माता को रणनीति बनाने के लिए नियमित वैज्ञानिक आकलन प्रदान करना है।
2. **संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क सम्मेलन** एक अंतरराष्ट्रीय समझौता है जिसका उद्देश्य वायुमंडल में ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को नियंत्रित करना है।
3. **पेरिस समझौता** जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय समझौता है।
4. **अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन-** इसके प्रमुख उद्देश्यों में वैश्विक स्तर पर अधिक से अधिक सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता प्राप्त करना है।

जलवायु परिवर्तन और भारत के प्रयास -

जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना -इसका शुभारंभ वर्ष 2008 में किया गया था। इसका उद्देश्य जनता के प्रतिनिधियों, सरकार की विभिन्न एजेंसियों, वैज्ञानिकों उद्योग और समुदायों को जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न खतरे और इससे मुकाबला करने के उपाय के बारे में जागरूक करना है। इस कार्य योजना में आठ मिशन शामिल हैं । राष्ट्रीय सौर मिशन, विकसित ऊर्जा दक्षता के लिए राष्ट्रीय मिशन, सुस्थिर निवास पर राष्ट्रीय मिशन, राष्ट्रीय जल मिशन, हिमालय पारिस्थितिक तंत्र हेतु राष्ट्रीय मिशन, हरित भारत हेतु राष्ट्रीय मिशन, कृषि हेतु राष्ट्रीय मिशन, जलवायु परिवर्तन हेतु राजनीतिक ज्ञान पर राष्ट्रीय मिशन शामिल है।

जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए मिशन और नीतियां कितनी भी बन जाए लेकिन वह कारगर तभी होंगे जब सभी मिल कर एकजुट हो कर एक सुरक्षित भविष्य हेतु कार्य करें, नीतियों का कड़ाई से पालन करें और सुनिश्चित करें कि प्रयासों में सफलता प्राप्त हो रही है। यह जीवन के लिए और इस पृथ्वी के भविष्य के लिए एक निर्णायक योजना है।

करते-करते पृथ्वी का दोहन और क्षरण,
मनुष्य न बन जाए अपने ही अंत का कारण,
जल और वायु में आज है जहर,
रुक और रोक आने को है कहर।

जीवन और प्रकृति का नियम ही है परिवर्तन I जो जीवित है वह परिवर्तित होता ही है I अगर वह परिवर्तित नहीं हो रहा इसका मतलब वह जीवित नहीं है I हमें यह प्रयास करना होगा कि यह परिवर्तन सकारात्मक हो ,मानवता और समस्त पृथ्वी, जलवायु ,जीव-जंतुओं के अनुकूल हो I किसी को नुकसान ना पहुंचाएं और सबके विकास में सहायक हो। इस पृथ्वी पर हम प्रकृति से सामंजस्य बिठाकर ही जीवित रह सकते हैं अन्यथा विनाश निश्चित है। जैसा कि समय-समय पर बड़ी-बड़ी प्राकृतिक आपदाओं के समय देखा जा सकता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा है,"हमारा मानना है कि जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने के लिए पाबंदियो वाले रवैया को बदलना चाहिए,'क्या नहीं किया जाना चाहिए' से हटकर' क्या किया जा सकता है 'वाली सोच के साथ आगे बढ़ना होगा।"

देश की माटी देश का जल,हवा देश की देश के फल
सरस बने प्रभु सरस बने, देश के घर और देश के घाट ।

गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर

राजभाषा अधिनियम 1963

धारा 3(3) के अंतर्गत दस्तावेज़

संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें व सरकारी कागजात, संविदा, करार , अनुज्ञप्तियाँ, अनुज्ञापत्र, निविदा सूचनाएं एवं निविदा प्रपत्र इन दस्तावेज़ो को अनिवार्यतया द्विभाषिक जारी किया जाना चाहिए।

कहानी

संतोषी

डॉ.शिल्पी शुक्ला
वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा
लखनऊ

बर्थ डे पार्टी में सभी लोग बात-चीत में मश्गूल थे। संगीत की हल्की ध्वनि आ रही थी। तो वहीं बच्चों की भाग दौड़ माहौल को जीवंतता प्रदान कर रहीं थी।

संतोषी- अरे, दीक्षा, बहुत दिन बाद दिखी तुम? चहेरे पर कुछ गंभीरता लाते हुए संतोषी ने कहा, संतोषी अपने नाम के बिल्कुल विपरीत प्रवृत्ति की महिला थी जिसमें किसी भी बात को लेकर लेशमात्र भी संतोष न था।

दीक्षा- हां भाभी, अभी पिछले महीने ही आई थी। बार-बार छुट्टी नहीं मिलती और फिर बेटे की पढ़ाई के कारण महीने या दो महीने में ही आना हो पाता है। दीक्षा ने उत्तर दिया। दीक्षा का उत्तर सुनकर संतोषी लोगों को अपनी बात सुनाने की मंशा से उनकी ओर देखते हुए फिर बोलती है- 'अरे कहां, हमें तो लगता है जब से शादी हुई है , तुम ससुराल ज्यादा आई ही नहीं हो। अब तुम्हारे सास-ससुर के साथ तुम रही ही कितना हो?

दीक्षा- ऐसी बात नहीं है भाभी अक्सर तो आती रहती हूं।

संतोषी – हम तो जब भी आते हैं तुम नहीं मिलती हो? अभी मामा बीमार पड़े थे तब भी शायद नहीं आई थी। तुम्हारी चाची के बेटे की शादी में भी तुम नहीं दिखी थी।पास खड़ी सभी महिलाएं जो अभी तक अपनी बातें भी कर रहीं थीं। खामोशी से दीक्षा को देखने लगती हैं। उनकी यह खामोशी और लगातार दीक्षा को देखना उसे व्यंग्यात्मक लगता है।

संतोषी – क्यों कानपुर वाली भाभी मिलती है ये कभी तुम्हें ससुराल में। अपने पक्ष में अन्य लोगों की प्रतिक्रिया करने के उद्देश्य से संतोषी ने कहा।

कानपुर वाली भाभी भी मामले में रूचि ले कर दीक्षा को एक टक देखने लगी।

दीक्षा – भाभी, आप हर समय तो यहां नहीं आती हो, इसलिए आपसे भेंट नहीं हो पाती।

संतोषी – अब भई, भले ही कितना मन-मुटाव हो भाई-बहनों में पर कोई आना-जाना तो नहीं छोड़ देता है। अच्छा अब कब आओगी? अभी कुछ दिनों में सकट पड़ेगा बेटे को छुट्टी दिलवा देना और यहां आ जाना। सब व्रत पर्व यहीं करने चाहिए पर तुम लोगों को तो फुर्सत ही नहीं है।

दीक्षा- देखती हूं भाभी, जैसे ही मौका मिलेगा आ जाएंगे। किसी से मन-मुटाव की तो कोई बात नहीं है।

संतोषी – तो, फिर सास-ससुर से कोई बात है क्या ? संतोषी ने अगला पांसा फेंकते हुए सभी महिलाओं पर दृष्टि डाली। आज कल वैसे भी घर-घर में मनमुटाव होना आम बात है। बोल कर संतोषी दूसरी महिलाओं की ओर देखती है प्रत्युत्तर में कुछ महिलाएं उसे देख कर हां में अपना सिर हिलातीं हैं।

सभी महिलाएं दीक्षा को अपनी एक्स रे करती नज़रों का केन्द्र बिंदु बना लेती हैं। इधर संतोषी भी अपनी पूरी रौ में आ जाती है कि आज तो वो भरी महफिल में दीक्षा को सबके सामने बहुत छोटा साबित कर उसकी बेइज्जती कर देगी। इससे उसे असीमित आनंद और संतोष मिलने वाला था जो उसे अक्सर लोगों को नीचा दिखा कर मिलता था। कुछ लोग दूसरों को नीचा दिखा कर स्वयं को उनसे श्रेष्ठ साबित करने में विश्वास रखते हैं। उन्हें दूसरों के घरों में झांकने में विशेष आनंद आता है। संतोषी भी इसी प्रकार की महिला है।

संतोषी- कब आओगी अब?

सभी महिलाएं उत्तर की प्रतीक्षा में दीक्षा की ओर तो कभी एक दूसरे की ओर देखने लगती हैं।

एकाएक दीक्षा की आवाज़ में दृढ़ता आ जाती है।

कोल्ड ड्रिंक का सिप लेते हुए वो बोलती है – भाभी, आपके बेटे की शादी को भी दो साल हो गए हैं न, मैं आई थी शादी में पर शादी की भागम भाग से आपकी बहू से मिल ही नहीं पाई थी।

संतोषी – हां, दो साल हुए शादी को, संतोषी ने सपाट लहजे में बोलते हुए बात आगे बढ़ाई, अच्छा तुमने बताया नहीं अब कब आओगी? संतोषी ने दीक्षा की बात में अरूचि दिखाते हुए कहा।

दीक्षा – बहू को साथ लेकर नहीं आईं आप?

अप्रत्याशित प्रश्न के लिए न तो संतोषी तैयार थी और न ही उसके साथ खड़ी रिश्तेदारी की अन्य महिलाएं ।

संतोषी – 'नहीं, मैंने सोचा हम दोनों ही चल कर मिल आते हैं, जन्मदिन की पार्टी ही थी, कोई शादी तो थी नहीं। संतोषी ने दीक्षा की बात को गैर ज़रूरी समझते हुए बेफ्रिक्री से अपनी बात जारी रखी - 'तुमने बताया नहीं कि तुम अब कब आओगी ? इन लोगों का मन भी तो बेटे बहू के साथ रहने का करता है। भई घर तो मेल-जोल से ही चलता है। साथ रहने से प्यार बढ़ता है। तुम्हें इतना तो सोचना चाहिए।'

संतोषी की दुर्भावना दीक्षा उससे पहली मुलाकात में ही समझ चुकी थी अनेक अवसरों पर वह संतोषी का व्यवहार भी देख चुकी थी।

अच्छा, भाभी मैं तो पुरानी हो गई, 10 साल का तो मेरा बेटा ही हो गया है। आपकी बहू तो अभी नई है। आजकल कहां है? दीक्षा ने भी सपाट लहजे में कहा।

अचानक से दीक्षा के चेहरे के बदलते रंग को सभी महिलाओं ने नोटिस किया। संतोषी भी उसे एक-टक देखते हुए मुस्कुराने की कोशिश करते हुए बोलती है- 'घर में बात तो हुई होगी तुम्हारे सकट में आने के बारे में? क्या विचार है तुम्हारा ?

अरे, मुझे छोडिए भाभी मैं पूछ रही हूं कि आपकी बहू कहां है? दीक्षा ने समान भाव से कहा।

बहू तो ठीक है, तुम ससुराल आती रहा करो। संतोषी ने बात बदलने की कोशिश की।

हां भाभी आती हूं तभी तो यहां खड़ी हुई हूं। आपकी बहू के बारे में सुना था, इसलिए पूछ रही थी कि कहां है? वो अल्का तलाक के बारे बता रही थी। बोल रही थी कि आपकी अपनी बहु से .... इतना सुनते ही संतोषी बीच में ही बात काटते हुए बोलती है-बहु अपने मायके में है। संतोषी ने दीक्षा की ओर देखने के बाद फर्श देखते हुए कहा।

अरे, तुम्हारे भैया का कॉल आ रहा है। फ़ोन देखते हुए संतोषी तेज़ कदमों से बाहर की ओर निकल जाती है। सभी महिलाएं अर्थपूर्ण दृष्टि से दीक्षा की ओर देखने लगती हैं और फिर तितर-बितर हो जाती हैं। दीक्षा के पास दौड़ कर उसका बेटा आ जाता है और दोनों हाथ पकड़ कर उसके दादा-दादी की ओर चल पड़ते हैं।

मास्टर दक्षित, पुत्र सुश्री प्राची श्रीवास्तव , यू के जी

#यूको गोज़ डिजीटल / # UCOgoesDigital

यूको बैंक डिजिटल उपस्थिति बढ़ाने और ग्राहकों की सुविधा सुनिश्चित करने के लिए सभी प्लेटफार्मों पर *#UCOgoesDigital* का प्रमुखता से प्रचार करें।

डिजिटल विकास को गति देने के लिए प्रमुख फोकस क्षेत्र:

एसटीपी के माध्यम से ऋण प्रक्रिया को अधिकतम करें । सुनिश्चित करें कि अधिकतम ऋण (विशेषकर कार ऋण, व्यक्तिगत ऋण आदि) मैन्युअल प्रक्रिया के बजाय एसटीपी (स्ट्रेट थ्रू प्रोसेसिंग) के माध्यम से संसाधित हों।

आइए, ग्राहकों के लिए डिजिटल को पसंदीदा माध्यम बनाएं

लेख

बैंकों में हिन्दी का प्रयोग – सफल प्रयास और नवाचार

श्री विरेन्द्र सिहाग,
मुख्य प्रबंधक, सुरक्षा,
अंचल कार्यालय

भाषा किसी राष्ट्र की आत्मा होती है। भारतीय उपमहाद्वीप विविध भाषाओं और रस-रंगों से भरा हुआ है। यहाँ विभिन्न बोलियाँ, स्थानीय भाषाएँ एवं सांस्कृतिक विविधताएँ मिलती हैं, लेकिन हिन्दी भारत की वह भाषा है जो जन-जन से जुड़ी हुई है—वह भाषा जिसे बहुत से लोग बोलते हैं, समझते हैं और उसके माध्यम से अपने भाव व्यक्त करते हैं। हिन्दी न सिर्फ भाषा है, बल्कि यह प्रतीकों, भावनाओं, सामाजिक बोध और राष्ट्रीय पहचान का एक महत्तवपूर्ण अंग भी है।

बैंकिंग व्यवस्था किसी राष्ट्र की आर्थिक रीढ़ होती है। बैंकों का काम पूँजी संग्रहण, ऋण प्रदान करना, भुगतान व्यवस्था सुनिश्चित करना, वित्तीय समावेशन बढ़ाना आदि है। जब बैंकिंग सेवाएँ केवल कुछ खास भाषाओं—विशेषकर अंग्रेजी—के माध्यम से उपलब्ध हों, तो बहुत से लोग, विशेषकर ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी क्षेत्र के नागरिक, उनसे पूरी तरह लाभ नहीं उठा पाते। इसी कारण, बैंकों में हिन्दी का प्रयोग केवल एक भाषा-संबंधी विषय नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, अवसर समानता और आर्थिक समावेशन का विषय है। बैंकों में हिन्दी का प्रयोग किन सफल प्रयासों से बढ़ रहा है, किन-किन नवाचारों के माध्यम से इसे और प्रभावी बनाया गया है, किन चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, तथा आगे की दिशा क्या हो सकती है इस पर विचार किया जाना आवश्यक है।

हिन्दी प्रयोग की आवश्यकता

सामाजिक एवं भाषायी समानता -भारत की आबादी का एक बड़ा हिस्सा हिन्दी बोलने और हिन्दी को समझने वाला है। भाषा का प्रयोग सिर्फ संवाद के माध्यम के रूप में नहीं है, बल्कि संचार की पहुँच बढ़ाने का एक जरिया है। अगर बैंकिंग सूचना या दस्तावेज़ अंग्रेजी भाषा में हों, तो अनेक लोगों को उसका सही अर्थ नहीं समझ आता। ब्याज की दर, शुल्क, नियम-शर्तों आदि का सही ज्ञान न होने से वे परेशान हो सकते हैं या गलत निर्णय ले सकते हैं।

वित्तीय समावेशन - भारत सरकार तथा बैंकिंग नियामक संस्थाएँ (जैसे रिज़र्व बैंक) लगातार यह अभियान चला रही हैं कि बैंकिंग सेवाएँ हर नागरिक तक पहुँचें—चाहे कोई गाँव में हो या शहर के उपनगर में। हिन्दी के प्रयोग से यह संभव हो जाता है कि हर ग्राहक अपने स्तर पर बैंक सेवाएँ समझ सके, उनका उपयोग कर सके, उन्हें भरोसा हो कि वे अपने अधिकारों व कर्तव्यों को जान रहे हैं।

ग्राहक संतुष्टि एवं अनुभव सुधार -जब ग्राहक अपनी मातृभाषा में संवाद कर सकें—खाता खोलते समय, जानकारी माँगने पर, ऋण आवेदन, शिकायत दर्ज कराते समय—तो उसके अनुभव में आत्मविश्वास व संतुष्टि आती है। इससे बैंक-ग्राहक संबंध मजबूत होते हैं, विश्वास बढ़ता है, और बैंक की प्रतिष्ठा भी सुधरती है।

सरकारी नीतियाँ एवं सरकारी भाषा नीति- हिन्दी भारत की राजभाषा है। संविधान एवं विभिन्न सरकारी अधिनियमों द्वारा सरकार ने हिन्दी को बढ़ावा देने के निर्देश दिए हैं। बैंक, जो अक्सर सार्वजनिक क्षेत्र के वित्तीय संस्थाएँ होती हैं या जिनके ऊपर सरकारी नियंत्रण हो, उनके लिए यह अनिवार्य हो जाता है कि हिन्दी भाषा का प्रयोग हो। इस प्रकार शासन की इच्छाएँ और नीति दोनों ही हिन्दी प्रयोग के पक्ष में हैं।

स्थानीयता एवं सांस्कृतिक पहचान-

हिन्दी न सिर्फ भाषा है, बल्कि इससें भावनाएँ, संस्कृति और पहचान भी है। यदि बैंकिंग सेवाएँ स्थानीय संदर्भों, बोलियों और संदर्भों के अनुरूप हों—हल्ला-गुल्ला, ऋण की शर्तें, ग्राम सभा की भाषा आदि—तो लोग उनसे जुड़ते हैं। हिन्दी का प्रयोग स्थानीय पहचान को सम्मिलित करता है, ग्राहक में अपनापन उत्पन्न करता है।

बैंकों में हिन्दी प्रयोग: सफल प्रयास एवं उदाहरण

विभिन्न क्षेत्रों में हुए सफल प्रयोगों और उदाहरणों को देखें तो यह स्पष्ट होगा कि हिन्दी प्रयोग सिर्फ विचार नहीं, बल्कि व्यवहार में परिवर्तन ला रहा है।

दस्तावेज़ीकरण (Documentation) में हिन्दी

खाता खोलने के फॉर्म और प्रपत्र: अधिकांश सार्वजनिक बैंक और ग्रामीण बैंक/क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक (RRBs) ने खाता खोलने, परिचय पत्र/पहचान प्रमाण आदि के फॉर्म हिन्दी/मिश्रित हिन्दी-भाषा (हिन्दी + स्थानीय भाषा) में उपलब्ध कराना शुरू कर दिया है। इससे लोगों को फॉर्म भरने में आ रही भाषा संबंधी अड़चनें कम हुई हैं।

ऋण आवेदन पत्र, बीमा पॉलिसी, फिक्स्ड डिपॉज़िट / सेविंग्स प्रमाण पत्र आदि: ये भी हिन्दी में प्रचलित हो रहे हैं। उदाहरण स्वरूप, कुछ बैंकों ने ऋण शर्तों को हिन्दी में सरल भाषा में लिखा है ताकि गाँव-गाँव के लोग समझ सकें।

चेक बुक, बैंक पासबुक, जमा/निकासी स्लिप्स आदि: हिन्दी में लिखे गए स्लिप्स एवं पासबुक ग्राहकों के लिए अधिक उपयोगी हैं। बैंक आचरण में यह बदलाव धीरे-धीरे देखने को मिल रहा है।

सूचना-पत्र, घोषणाएँ एवं बैंक शाखा बोर्ड

बैंक शाखाओं में बोर्ड, सूचनापट्ट, निर्देश, ग्राहक सूचना जैसे 'ATM ×× प्रबंधक' आदि हिन्दी में लिखे जाते हैं। शाखा में नियत शुल्क, शाखा समय, कार्यक्रम आदि की सूचना हिन्दी में होती है।

बैंक द्वारा जन सूचना-पत्र, जागरूकता अभियानों के पोस्टर आदि हिन्दी में तैयार किए जाते हैं। पोर्टल या वेबसाइट पर "सावधानियाँ बतायी गयीं हैं हिन्दी में" जैसी घोषणाएँ।

ग्राहक सेवा एवं शाखा संवाद

शाखा अधिकारी और ग्राहक सेवा केंद्रों पर हिन्दी बोलने वाले स्टाफ की व्यवस्था। यदि ग्राहक हिन्दी में बोलना चाहता है, तो सभी कर्मचारियों को हिन्दी समझनी चाहिए।

कॉल सेंटर्स और हेल्प डेस्क हिन्दी भाषा में सेवा देने लगे हैं। टोल-फ्री नंबर पर हिन्दी भाषा में बोलकर समाधान पाने की सुविधा है।

शिकायत निवारण प्रक्रियाएँ हिन्दी में उपलब्ध। ग्राहक शिकायत पत्र हिन्दी में भर सकते हैं, फीडबैक हिन्दी में दे सकते हैं।

प्रचार, जागरूकता अभियान और विज्ञापन

बैंक हिन्दी भाषा में विज्ञापन कर रहे हैं—टीवी, रेडियो, समाचार पत्र, होर्डिंग्स आदि माध्यमों से। विशेषकर हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी रेडियो एवं स्थानीय समाचार पत्रों का प्रयोग हो रहा है।

वित्तीय शिक्षा कार्यक्रम हिन्दी में आयोजित हो रहे हैं; ग्रामों में बैंक अधिकारियों द्वारा बैठकों या शिविरों में हिन्दी में समझाइश दी जा रही है।

विशेष योजनाएँ जैसे प्रधानमंत्री जन धन योजना, मुद्रा योजना आदि के प्रचार-प्रसार में हिन्दी भाषा का उपयोग बढ़ रहा है।

डिजिटल बैंकिंग और तकनीकी आधुनिकीकरण

मोबाइल बैंकिंग एवं इंटरनेट बैंकिंग ऐप्स में हिन्दी इंटरफ़ेस: बैंक अपने ऐप या वेबसाइट्स पर भाषा परिवर्तन का विकल्प दे रहे हैं। मेनू, निर्देश, सहायता विकल्प आदि हिन्दी में मुहैया हो रहे हैं।

एसएमएस, ओटीपी, नोटिफिकेशन आदि हिन्दी में: बैंक द्वारा भेजे जाने वाले अलर्ट, मैसेज आदि हिन्दी में भेजे जा रहे हैं। इससे ग्राहकों को तुरंत समझ आने वाली सूचना मिलती है।

चैटबॉट्स और वर्चुअल असिस्टेंट: कुछ बैंक ऐसे चैटबॉट्स प्रयोग कर रहे हैं जो हिन्दी में प्रश्नों को समझें और हिन्दी में उत्तर दें। यह सुविधा विशेषकर उन ग्राहकों के लिए उपयोगी है जो डिजिटल सेवाएँ उपयोग करना चाहते हैं लेकिन अंग्रेजी में सहज नहीं हैं।

वॉयस बैंकिंग एवं आईवीआर सिस्टम: ग्राहक कोई जानकारी लेने या सेवा प्राप्त करने के लिए टेलीफोन पर हिन्दी में बोलकर बात कर सकते हैं। ऑटोमैटिक सन्देश हिन्दी में हो सकते हैं।

नवाचार के ज़रिये हिन्दी प्रयोग को बढ़ावा

स्थानिक भाषा अनुकूलन—हिन्दी के साथ-साथ स्थानीय बोलियाँ और स्थानीय भाषा संदर्भों को सम्मिलित करना।

उदाहरण के लिए उत्तर प्रदेश के गाँवों में हिन्दी बोलने का स्वर कुछ विशेषता लिए होता है, जिसे विज्ञापन या सूचना में स्थानीय बोली के अनुसार अनुकूलित किया जा रहा है।

हैश्टैग अभियान और डिजिटल सामग्री का निर्माण: सोशल मीडिया पर हिन्दी में पब्लिक पोस्ट्स, वीडियो, इन्फोग्राफ़िक्स आदि। बैंक अपने ग्राहकों को समझाने के लिए यूट्यूब वीडियोज़ या व्हाट्सऐप संदेश हिन्दी में भेजते हैं।

उन्नत भाषा प्रसंस्करण (Advanced Language Prcessing): मशीन अनुवाद (machine translation), स्वचालित शब्दावलियों (glossaries), हिन्दी टेक्स्ट टु स्पीच, स्पीच रिकग्निशन आदि तकनीकों का उपयोग। **निजी क्षेत्र बैंकों में हिन्दी प्रयोग को बढ़ावा**

सार्वजनिक बैंक ही नहीं, निजी बैंक एवं विदेशी बैंक परिसर (branches) भी हिन्दी प्रयोग में सक्रिय हों। वे हिन्दी इंटरफ़ेस, हिन्दी प्रचार-प्रसार आदि के माध्यम से हिन्दी भाषी ग्राहकों की अपेक्षाएँ पूरी कर सकते हैं।

वे हिन्दी डिजिटल उत्पाद तैयार करें जो ग्राहकों को आकर्षित करें।

हमने देखा कि हिन्दी प्रयोग सिर्फ भाषिक विषय नहीं है, बल्कि आर्थिक, सामाजिक व तकनीकी विषयों से जुड़ा हुआ है। बैंकिंग सेवाएँ जब हिन्दी में हों, तो वित्तीय समावेशन बढ़ता है, ग्राहक संतुष्टि बढ़ती है, और बैंक-ग्राहक के बीच विश्वास स्थापित होता है। विगत वर्षों में हुए सफल प्रयास—दस्तावेज़ीकरण, शाखा संवाद, डिजिटल नवाचार, भाषा प्रशिक्षण—ने यह दिखाया है कि हिन्दी प्रयोग सिर्फ असंभव सपना नहीं, बल्कि साकार हो रही वास्तविकता है। नवाचारों ने इसे और अधिक सशक्त बनाया है—चैटबॉट्स, वॉयस असिस्टेंट मोबाइल ऐप हिन्दी विकल्प, स्थानीय भाषा अनुकूलन इत्यादि।

लेकिन चुनौतियाँ अभी भी हैं—भाषा विविधता, तकनीकी बाधाएँ, मानव संसाधन की कमी, नीति व पालन में असंगति, जागरूकता का अभाव इत्यादि। ये सभी माध्यमिक नहीं, बल्कि मूलभूत चुनौतियाँ हैं जिन्हें योजनाबद्ध तरीके से हल करना होगा। बैंकों में हिन्दी प्रयोग की यात्रा और भी ज्यादा सफल, समावेशी और प्रभावशाली होगी। हिन्दी सिर्फ हमारे बोलने की भाषा ही नहीं, बल्कि सेवा, उन्नति और समानता की भाषा बने। इससे न केवल भाषा को सम्मान मिलेगा, बल्कि बैंकिंग व्यवस्था को जीवन्तता, भरोसा और व्यापकता प्राप्त होगी।

अनुच्छेद 343-संघ की राजभाषा

संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

खंड (1) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था :

परन्तु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान, आदेश द्वारा, संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।

इस अनुच्छेद में किसी बात के होते हुए भी, संसद उक्त पन्द्रह वर्ष की अवधि के पश्चात, विधि द्वारा अंग्रेजी भाषा का, या अंकों के देवनागरी रूप का,ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएं।

कविता

भिक्षुक

श्री अंशुमन मिश्रा
सहायक प्रबंधक, अंचल कार्यालय

आज नयन यूँ बयरी होके गाएँ गीत मलहार,
याद परे नहीं कवन दिसा से बरसे मेघ घनार,

राह तके कितने घन बीते निहरे आये कोई इस पार,
बूढ़ी काया पीड़ा दे और मनवा करे नित सोलह सिंगार,

दिन प्रति प्रेम बढ़े चंचल तरु लता पुष्पों पर हो सवार,
आज क्यूँ आल्हादित जौबन गूँजे करें ज्यूँ भ्रमर गुंजार,

जाने कबसे राह ताकती ज्योति हो रही क्षीण,
जाने किस राह चलेंगे बैरी तकने मुझको दीन,

पवन करे क्रीड़ा मन भ्रमित चंचल और चकित है,
मलय हर ओर सुंदर पुष्पों की लहर बहती त्वरित है,

हाय! आज भी ना आए, अरे कैसे निष्ठुर स्वामी वो,
तन छोड़ चलेगी प्राण सखी, कैसे धरूँ अब इसको,

दीप जला द्वारे बैठी और बेर खाएं मर्कट कर नाच,
मैं चखूँ रख लूँ मीठे कचनार, क्यूँ वो जाने कैसी बात,

यही करते बीते सहस्त्र वर्ष अब भी है पूरी आस,
आएंगे स्वामी इसी मार्ग से देंगे मेरा सौभाग्य,

अहो प्रभात बेला है मार्ग प्रशस्त पंकज से कर दूँ,
चरणों की कोमलता प्रेमाश्रु का मान कहीं से रख लूँ,

सहस्त्र पराग पुष्प धरा पर ताक रहे उस ओर ,
रख दे भिक्षुक आज चरण तर जाएं तोड़ हर डोर,

राह ताकती बूढ़ी दृष्टि स्पंदन हृदय तीव्र अकारण नहीं हुआ है,
काया झुकी माथा उठा के देखे दो भिक्षुक संशय अभी जया है,

कौन हो तुम सुंदर गंभीर नर कि नारायण अब स्वयं यहाँ हो,
हो सौभाग्य मेरा या कोई व्यंग्य नियति का कहो जहाँ हो,

दो भीख प्रेम की माँ हमको जैसी तुम्हरी इच्छा हो,
क्षुधा तीव्र है भोजन कुछ दे दो मंगल अब तेरा हो,

अहो गुरु पितु मात सखा तुम भिक्षुक बन आये हो,
ये मीठे बेर चखो जिससे शान्त तुम्हारी क्षुधा हो,

देखो हँस हँस कर खा रहा जूठे बेर वो बन भोला कौतुक,
आस भरी दृष्टि सजल है बोला वो स्वामी बनकर भिक्षुक,

भर दो माँ झोली प्रेम से कुछ बूझे बिना बोला वो उत्सुक,
अश्रुजल से सिंचित कर रही पंकज चरण ये वृद्धा अद्भुत,

मैं तो अभागी अधम तुम मायापति मुझको दो स्थान चरण में,
तुम दानी करो दया रखो मुझे भिक्षुक मान अपने संस्मरण में,

भिक्षुक मान अपने संस्मरण में... स्वामी अपने संस्मरण में...

लेख

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन

लिपि प्रकाश
प्रबन्धक
शहीद पथ शाखा

'कृत्रिम बुद्धिमत्ता 'स्वर्ण युग' में है और उन समस्याओं को हल कर रहा है जो कभी विज्ञान-कल्पना के दायरे में थीं।" -मार्क जुकरबर्ग

मानव सभ्यता के विकास की गाथा विज्ञान और तकनीक की उपलब्धियों से भरी पड़ी है। आदिम युग में जब मनुष्य ने पत्थर को हथियार के रूप में उपयोग करना सीखा, तभी से उसके बौद्धिक विकास की यात्रा प्रारम्भ हुई। समय के साथ जब उसने कृषि, धातुकर्म, पहिया, मुद्रण कला और बिजली जैसी खोजें कीं, तब सभ्यता और संस्कृति का नया अध्याय लिखा गया। इक्कीसवीं सदी में इस विकास यात्रा का नवीनतम और अत्यंत क्रांतिकारी अध्याय है—कृत्रिम बुद्धिमत्ता।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का तात्पर्य ऐसी मशीनों और कम्प्यूटर प्रणालियों से है, जो मानवीय मस्तिष्क की तरह सोच, समझ, विश्लेषण और निर्णय लेने की क्षमता रखती हों। यह तकनीक आज के युग में उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, रक्षा और संचार सहित लगभग हर क्षेत्र में क्रांति ला रही है। दूसरी ओर, किसी भी संगठन, राष्ट्र या समाज की वास्तविक शक्ति उसके मानव संसाधन में निहित होती है। योग्य, प्रशिक्षित और सशक्त मानव संसाधन ही विकास की गति को सुनिश्चित करता है। जब हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन को साथ लेकर विचार करते हैं तो यह प्रश्न उठता है कि दोनों का परस्पर संबंध कैसा है—क्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव संसाधन का विकल्प है या उसका सहयोगी?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की परिभाषा और विकास

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का शाब्दिक अर्थ है—'कृत्रिम रूप से निर्मित बुद्धि'। इसे कम्प्यूटर प्रोग्राम या रोबोट के रूप में समझा जा सकता है जो मानव की तरह सोचने और निर्णय लेने में सक्षम हो।

* 1956 में अमेरिका के डार्टमाउथ कॉलेज में 'जॉन मैकार्थी' ने पहली बार " आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस" शब्द का प्रयोग किया।
* प्रारम्भिक काल में इसका उद्देश्य केवल गणनाओं और तर्कपूर्ण कार्यों को सरल बनाना था, किंतु आज यह चेहरे की पहचान, भाषा अनुवाद, स्वचालित वाहन, चिकित्सा निदान और यहाँ तक कि रचनात्मक लेखन जैसे कार्यों में दक्ष हो चुकी है।
* मशीन लर्निंग, डीपलर्निंग और न्यूरल नेटवर्क जैसी तकनीकें इस विकास के प्रमुख आधार हैं।

मानव संसाधन का महत्व

मानव संसाधन किसी भी संगठन या राष्ट्र का सबसे मूल्यवान पूंजी होता है। मशीनें, पूँजी, प्राकृतिक संसाधन तभी सार्थक हैं जब उन्हें संचालित करने के लिए योग्य मानव उपलब्ध हो।

* ज्ञान और कौशल से परिपूर्ण मानव ही तकनीक का आविष्कार करता है।
* प्रबंधन और नीति निर्माण भी मानव संसाधन की देन है।
* राष्ट्र की प्रगति का स्तर इस पर निर्भर करता है कि वहाँ का श्रमबल कितना साक्षर, प्रशिक्षित, सशक्त और प्रेरित है।

इसलिए आधुनिक समय में हर देश मानव संसाधन विकास पर विशेष ध्यान दे रहा है। शिक्षा, प्रशिक्षण, स्वास्थ्य, रोजगार और कौशल-विकास कार्यक्रमों के माध्यम से कार्यबल को मजबूत बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन का परस्पर संबंध

(क) सहयोगी संबंध

1. **मानव संसाधन प्रबंधन में उपयोग** – भर्ती, चयन, प्रशिक्षण और मूल्यांकन में आधारित सॉफ़्टवेयर का उपयोग किया जा रहा है। यह बड़ी मात्रा में डाटा का विश्लेषण करके उपयुक्त उम्मीदवार चुनने में सहायक होता है।

2. **कार्य दक्षता में वृद्धि** – कृत्रिम बुद्धिमत्ता दोहराए जाने वाले कार्यों को संभाल लेता है, जिससे मानव को रचनात्मक और रणनीतिक कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने का अवसर मिलता है।

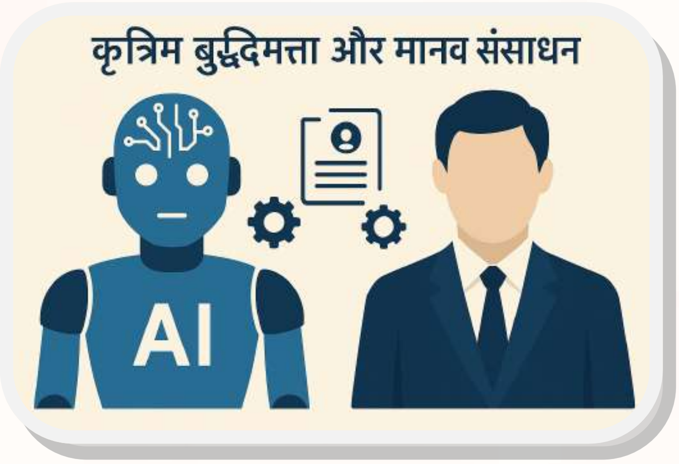

3. **शिक्षा एवं प्रशिक्षण** – ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, वर्चुअल कक्षाएँ और व्यक्तिगत शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराने में बुद्धिमत्ता की भूमिका महत्वपूर्ण है।

4. **स्वास्थ्य क्षेत्र** – डॉक्टरों को रोग-निदान और उपचार में सहायता मिलती है, जिससे मानव संसाधन की उत्पादकता और आयु दोनों बढ़ती है।

(ख) प्रतिस्पर्धी संबंध

1. **रोजगार पर खतरा** – कई उद्योगों में रोबोट और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित मशीनें मनुष्यों का स्थान ले रही हैं।

2. **कौशल की अप्रासंगिकता** – पुरानी तकनीकों से जुड़े कौशल तेजी से अप्रासंगिक हो रहे हैं।

3. **निर्भरता का संकट** – अधिकतर निर्णय यदि मशीन पर आधारित हों तो मानवीय संवेदना और नैतिकता कमजोर पड़ सकती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता से मानव संसाधन पर प्रभाव

1. **रोजगार संरचना में परिवर्तन**

- पारंपरिक नौकरियों जैसे टाइपिंग, बहीखाता, कॉल सेंटर, डेटा-एंट्री आदि को कृत्रिम बुद्धिमत्ता तेजी से प्रतिस्थापित कर रहा है।
- वहीं दूसरी ओर, डेटा साइंस, मशीन लर्निंग इंजीनियर, साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ, कृत्रिम बुद्धिमत्ता ट्रेनर जैसी नई नौकरियाँ उत्पन्न हो रही हैं।

2. **कौशल-विकास की आवश्यकता**

- भविष्य में केवल वही मानव संसाधन मूल्यवान होगा, जो नई तकनीकों को सीखने और अपनाने में सक्षम होगा।
- सृजनात्मकता, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, नेतृत्व क्षमता और समस्या समाधान जैसे कौशल अधिक महत्वपूर्ण होंगे।

3. **कार्यस्थल का रूपांतरण**

- कार्यालयों में वर्चुअल असिस्टेंट, चैटबॉट और ऑटोमेशन आम हो चुके हैं।
- 'वर्क फ्रॉम होम' और 'हाइब्रिड मॉडल' में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित निगरानी एवं प्रबंधन प्रणाली का बड़ा योगदान है।

4. **उत्पादकता और दक्षता में वृद्धि**

- मशीनें बिना थके लगातार काम कर सकती हैं।
- इससे उत्पादन लागत घटता है और गुणवत्ता बेहतर होती है।

चुनौतियाँ

1. **बेरोजगारी और असमानता** – निम्न और मध्यम कौशल वाले श्रमिक सबसे अधिक प्रभावित होंगे।

2. **नैतिक प्रश्न** – यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता निर्णय ले तो उत्तरदायित्व किसका होगा?

3. **डेटा गोपनीयता** – मानव संसाधन प्रणाली में प्रयुक्त कृत्रिम बुद्धिमत्ता बड़ी मात्रा में निजी जानकारी एकत्र करता है, जिसके दुरुपयोग की संभावना रहती है।

4. **मानवीय संवेदनाओं की कमी** – भर्ती, चयन या मूल्यांकन जैसे कार्य यदि केवल कृत्रिम बुद्धिमत्ता के भरोसे हों तो सहानुभूति और मानवीय दृष्टिकोण कमजोर हो सकता है।

अवसर

1. **नवाचार और अनुसंधान** – कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ काम करने से नए विचार और शोध को बल मिलेगा।

2. **वैश्विक प्रतिस्पर्धा** – सक्षम मानव संसाधन और उन्नत कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक मिलकर किसी भी देश को आर्थिक महाशक्ति बना सकते हैं।

3. **सामाजिक कल्याण** – स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण और सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव जीवन की गुणवत्ता सुधार सकता है।

4. **उद्यमिता और स्टार्टअप** – कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित सेवाओं और उत्पादों में अपार संभावनाएँ हैं।

भारत के संदर्भ में

भारत के पास विश्व का सबसे बड़ा युवा कार्यबल है। यदि इस युवा शक्ति को सही दिशा में प्रशिक्षित किया जाए तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन का संगम भारत को विश्व गुरु बना सकता है।

- **सरकारी पहल** – "डिजिटल इंडिया", "स्टार्टअप इंडिया", "स्किल इंडिया" जैसी योजनाएँ इसी दिशा में कदम हैं।
- **शिक्षा सुधार** – नई शिक्षा नीति 2020 में कोडिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा साइंस को स्कूली स्तर पर शामिल करने की बात कही गई है।
- **उद्योग–शिक्षा सहयोग** – विश्वविद्यालयों और उद्योगों को मिलकर कौशल विकास पर काम करना होगा।

भविष्य की दिशा

1. **मानव–मशीन सहयोग** – लक्ष्य यह होना चाहिए कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता , मानव की जगह न ले बल्कि उसे और अधिक सक्षम बनाए।

2. **नैतिक ढाँचा** – कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग के लिए स्पष्ट नैतिक और कानूनी मानदंड तय किए जाने चाहिए।

3. **सतत् प्रशिक्षण** – प्रत्येक कर्मचारी को समय-समय पर नई तकनीकों से अवगत कराना आवश्यक है।

4. **समावेशी विकास** – तकनीक का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे, तभी इसका वास्तविक उद्देश्य पूर्ण होगा।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन, दोनों ही आधुनिक युग की प्रगति के अनिवार्य स्तंभ हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की तीव्र गति से बढ़ती क्षमताएँ निश्चित ही मानव जीवन को सरल और सुगम बना रही हैं, परंतु यह भी सत्य है कि इसके दुरुपयोग से गंभीर चुनौतियाँ खड़ी हो सकती हैं। इसलिए आवश्यकता है एक ऐसे संतुलन की, जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव संसाधन का पूरक बने, उसका विकल्प नहीं।

मानव में निहित रचनात्मकता, संवेदनशीलता और नैतिकता को कोई मशीन प्रतिस्थापित नहीं कर सकती। अतः यदि हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता की शक्ति का उपयोग मानव संसाधन को और अधिक दक्ष, उत्पादक और सशक्त बनाने में करें, तो यह तकनीक मानव सभ्यता के लिए वरदान सिद्ध होगी।

"हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि एआई मानव मूल्यों के साथ संरेखित हो - क्योंकि एक बार जब यह हमें पार कर जाएगा, तो यह पीछे नहीं हटेगा।"

-मैक्स टेगमार्क

सुश्री लिपि प्रकाश, प्रबंधक शहीद पथ शाखा द्वारा बनाया स्केच

लेख

हरित वित्तीयन और भारतीय अर्थव्यवस्था

सुश्री छवि सक्सेना
प्रबंधक
अंचल कार्यालय

भारत वर्तमान समय में आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन साधने के महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है। जलवायु परिवर्तन प्रदूषण, जैव विविधता की हानि और प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इन सब ने यह स्पष्ट कर दिया है कि विकास यदि सतत नहीं होगा तो भविष्य खतरे में पड़ सकता है। इस संदर्भ में हरित वित्तीयन की अवधारणा अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है। हरित वित्तीयन न केवल पर्यावरण हितैषी परियोजनाओं के लिए पूंजी उपलब्ध कराता है बल्कि अर्थव्यवस्था को दीर्घकालिक रूप से सुरक्षित स्थिर और समावेशी भी बनाता है।

भारत जैसे विशाल जनसंख्या और विविध संसाधन वाले देश में जहां ऊर्जा की मांग प्रतिदिन बढ़ रही है। हरित वित्तीयन का महत्व और भी अधिक है। हरित वित्तीयन से अभिप्राय ऐसी निवेश गतिविधियों से है जिनका उद्देश्य पर्यावरण संवेदनशील और सतत विकास को प्रोत्साहित करना हो। इसमें वे सभी वित्तीय साधन सम्मिलित हैं जिनका उपयोग स्वच्छ परिवहन ,अपशिष्ट प्रबंधन, जल संरक्षण और जलवायु परिवर्तन के समाधान से जुड़ी परियोजनाओं के लिए किया जाता है।

यह वह वित्तीय ढांचा है जो आर्थिक विकास को पर्यावरणीय जिम्मेदारी के साथ जोड़ता है। हरित वित्तीयन भारत में मुख्यता उन क्षेत्रों में प्रयुक्त हो रहा है जो पर्यावरण स्थिरता और सतत विकास को बढ़ावा देते हैं। इसमें प्रमुख रूप से नवीकरणीय ऊर्जा जैसे सौर, पवन, जल, विद्युत और बायोमास परियोजनाओं में निवेश शामिल है। इसके साथ ही ऊर्जा दक्षता बढ़ाने के लिए उद्योगों भवनों और उपकरणों में नई तकनीक को अपनाया जा रहा है।

हरित परिवहन के क्षेत्र में इलेक्ट्रिक वाहनों चार्जिंग ऑप्शन संरचना और मेट्रो रेल जैसी परियोजनाओं को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त कचरा प्रबंधन एवं पुनर्चक्रण के अंतर्गत ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, प्लास्टिक पुनर्चक्रण और अपशिष्ट से ऊर्जा उत्पादन पर ध्यान दिया जा रहा है। हरित वित्तीयन का एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र जलवायु अनुकूल कृषि है जिसमें जैविक खेती ,जल संरक्षण तकनीक और सौर ऊर्जा संचालित सिंचाई को बढ़ावा दिया जाता है ।वन और जैव विविधता संरक्षण हेतु वृक्षारोपण कार्बन सिंक परियोजनाओं और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा की जा रही है। इस प्रकार हरित

भवन एवं संरचना के क्षेत्र में पर्यावरण अनुकूल निर्माण सामग्री ग्रीन बिल्डिंग प्रमाणन और स्मार्ट सिटीज जैसी पहलें सम्मिलित हैं। अंततः जल संसाधन प्रबंधन के लिए वर्षा जल संचयन अपशिष्ट जल शोधन और पुनः प्रयोग पर जोर दिया जा रहा है। इस प्रकार हरित वित्तीयन भारत में आर्थिक प्रगति और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करने का माध्यम बन रहा है।

भारत में हरित वित्तीयन की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह न केवल पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में सहायक है बल्कि आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए भी आवश्यक है। भारत दुनिया का पांचवा सबसे बड़ा ऊर्जा उपभोक्ता है और यहां विकास की गति लगातार तेज हो रही है।

लगातार तेज हो रही विकास की गति के साथ यदि देश केवल पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर निर्भर रहा तो कार्बन उत्पादन इतनी मात्रा में बढ़ सकता है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए संकल्पना को पूरा करना कठिन हो जाएगा।

ऐसे में हरित वित्तीयन की आवश्यकता इसलिए है ताकि नवीकरणीय ऊर्जा को प्रोत्साहन देकर कार्बन उत्सर्जन में कमी लाई जा सके और सतत विकास सुनिश्चित किया जा सके। यह ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करता है क्योंकि इससे आयातित जीवाश्म इंधनों पर निर्भरता घटती है।

हरित वित्तीयन नए रोजगार के अवसर भी उत्पन्न करता है क्योंकि नवीकरणीय ऊर्जा हरित प्रौद्योगिकी और सतत अवसंरचना से संबंधित परियोजनाओं में मानव संसाधन की आवश्यकता होती है। साथ ही यह घरेलू और विदेशी निवेशकों के लिए नए अवसर पैदा करता है और देश की वैश्विक साख को मजबूत करता है। भारत में पिछले एक दशक में हरित वित्त के क्षेत्र में अनेक कदम उठाए गए हैं भारत में 2015 में पहला ग्रीन बॉन्ड जारी किया। जिसके माध्यम से अक्षय ऊर्जा और पर्यावरण अनुकूल परियोजनाओं में निवेश हो रहा है।

भारतीय रिजर्व बैंक ने 2022 में हरित वित्तीयन को अग्रणी क्षेत्र ऋण में शामिल करने के संकेत दिए हैं। परियोजनाओं में निवेश से नए उद्योग और स्टार्टअप पनप रहे हैं। जिससे सकल घरेलू उत्पाद पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है हालांकि हरित वित्तीयन की संभावनाएं वृहद हैं, लेकिन इसके सामने चुनौतियां भी है जैसे –

- धन की कमी ।भारत को 2030 तक सतत विकास लक्ष्य को और नेट जीरो लक्ष्य के लिए खरबों डॉलर का निवेश चाहिए। जबकि व्यवहार में इसके मुकाबले बहुत कम निवेश हो पाता है।
- हरित परियोजनाओं का लाभ अक्सर लंबे समय बाद मिलता है । जिससे निवेशक हिचकिचाते हैं।
- अनेक हरित योजनाओं में परियोजनाओं में उन्नत तकनीक की आवश्यकता होती है जो महंगी और सीमित हैं।

भारत में हरित वित्तीयन की अपार संभावनाएं हैं। भारत के पास विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अक्षय ऊर्जा क्षमता है और यहां सौर और पवन ऊर्जा की प्रचुर संभावना है। इलेक्ट्रिक वाहनों और हाइड्रोजन व्यवस्था अर्थव्यवस्था जैसे क्षेत्र भविष्य में निवेश के बड़े स्रोत बन सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थान जैसे विश्व बैंक, एशियाई विकास बैंक और अंतरराष्ट्रीय निवेशक भारत की हरित परियोजनाओं में गहरी रुचि दिखा रहे हैं । इस प्रकार यदि सही नीतिगत और वित्तीय ढांचा उपलब्ध कराया जाए तो भारत हरित वित्तीयन का वैश्विक केंद्र बन सकता है। हमें-

- स्पष्ट हरित मानक और गाइडलाइन बनाने होंगे।
- हरित बॉन्ड का दायरा बढ़ाना होगा और उसका बाजार विकसित करना होगा।
- सामाजिक और निजी क्षेत्र में भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी ।
- साथ ही साथ तकनीकी अनुसंधान विकास को निवेश बढ़ाना होगा इसके साथ ही तकनीकी अनुसंधान विकास में निवेश बढ़ाना होगा ।
- हरित बीमा और जोखिम प्रबंधन साधनों का विकास सुनिश्चित करना होगा ।

हरित वित्तीयन भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए केवल एक विकल्प नहीं बल्कि आवश्यकता है। यह एक ऐसा उपकरण है जो विकास और पर्यावरण दोनों को एक साथ लेकर चलता है यदि भारत ऊर्जा आत्मनिर्भरता, रोजगार सृजन, जलवायु परिवर्तन से सुरक्षा और वैश्विक प्रति स्पर्धा में अग्रणी भूमिका चाहता है तो हरित वित्तीयन को प्राथमिकता देनी होगी। आने वाले वर्षों में यह प्रणाली भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ बन सकती हैं। उचित नीतियों, पर्याप्त निवेश और जन सहभागिता के माध्यम से भारत न केवल अपने नेट जीरो लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है बल्कि वैश्विक हरित वितरण का नेतृत्व भी कर सकता है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति लखनऊ –उपलब्धियां

श्री आशुतोष सिंह,अंचल प्रमुख लखनऊ पुरस्कार प्राप्त करते हुए

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), लखनऊ

संयोजक : भारतीय रिज़र्व बैंक, लखनऊ

गृह पत्रिका शील्ड - 2024-25

प्रमाण-पत्र

वर्ष 2024-25 के दौरान सदस्य कार्यालयों के लिए आयोजित हिन्दी गृह पत्रिका प्रतियोगिता में यूको बैंक, अंचल कार्यालय, लखनऊ.....की पत्रिका .....अवध संदेश.....को.....प्रशंसनीय.....स्थान प्राप्त करने के उपलक्ष्य में प्रदत्त।

पंकज कुमार
अध्यक्ष
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), लखनऊ

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति लखनऊ द्वारा प्रथम छमाही बैठक में सदस्य कार्यालयों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं को ‘नराकास गृह पत्रिका शील्ड’ पुरस्कार प्रदान किए गए। लखनऊ अंचल की छमाही पत्रिका 'यूको अवध संदेश’ को नराकास राजभाषा शील्ड, प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार उपनिदेशक कार्यान्वयन श्री छबिल कुमार मेहेर ने प्रदान किया।

नराकास लखनऊ द्वारा आयोजित अंतर बैंक प्रतियोगिताओं में पुरस्कार

श्रीमती स्वाति सिन्हा को नराकास लखनऊ द्वारा आयोजित अंतर बैंक प्रतियोगिता 'यादों के झरोखे से-हिंदी संस्मरण लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

श्री शशांक दीक्षित को नराकास लखनऊ द्वारा आयोजित अंतर बैंक 'हिंदी संस्मरण लेखन प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ ।

श्रीमती सारिका गुप्ता को नराकास लखनऊ द्वारा आयोजित अंतर बैंक 'हिंदी आशुभाषण प्रतियोगिता' में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति हरदोई –उपलब्धियां

हरदोई शाखा को वर्ष 2024-25 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्यवन के लिए नराकास राजभाषा शील्ड, प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार शाखा प्रमुख श्री उपेन्द्र कुमार सुमन ने सहायक निदेशक, कार्यान्यवन उत्तरी क्षेत्र 2 के कर कमलों से प्राप्त किया।

श्री विवेक सोलंकी,वरिष्ठ प्रबंधक हरदोई शाखा को नराकास हरदोई द्वारा आयोजित 'अंतर बैंक ऑन लाइन प्रतियोगिता' में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

श्री सुजीत कुमार, प्रबंधक हरदोई शाखा को नराकास हरदोई द्वारा आयोजित 'अंतर बैंक ऑन लाइन प्रतियोगिता' में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति सीतापुर –उपलब्धि

श्री छबिल कुमार मेहेर से श्री रवि पाण्डेय शाखा प्रमुख शील्ड ग्रहण करते हुए

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सीतापुर

प्रमाण–पत्र

यह प्रमाण पत्र श्री रवि पाण्डेय शाखा प्रबंधक, यूको बैंक सीतापुर को वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु सीतापुर नगर स्थित उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु के रूप में प्रदान किया जाता है।

हम इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

डॉ0 अंजनी कुमार पाण्डेय
सदस्य सचिव

स्थान : सीतापुर
दिनांक : 25 अगस्त 2025

आर.पी.दुबे
अध्यक्ष

सीतापुर शाखा को वर्ष 2024-25 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए 'उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन शील्ड प्रदान की गई। यह शील्ड शाखा प्रमुख श्री रवि पाण्डेय ने उपनिदेशक कार्यान्वयन श्री छबिल कुमार मेहेर के कर कमलों से प्राप्त की।

हिंदी कार्यशाला

प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए अंचल प्रमुख श्री आशुतोष सिंह

कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागीगण एवं वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा

अंचल कार्यालय लखनऊ द्वारा सितंबर एवं दिसंबर 2025 तिमाही की हिंदी कार्यशाला 23.09.2025 एवं 26.12.2025 को आयोजित की गई। कार्यशाला में कुल 52 प्रतिभागी उपस्थित थे। कार्यशाला में 39 अधिकारी एवं 13 लिपिकों ने प्रतिभागिता की ।

कार्यशाला का उद्घाटन अंचल प्रमुख श्री आशुतोष सिंह ने किया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को हिंदी में अधिक से अधिक काम करने के लिए प्रेरित किया।

कार्यशाला में प्रतिभागियों को राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति, नियम-अधिनियम की जानकारी दी गई। इस कार्यशाला में स्टाफ सदस्यों को तिमाही प्रगति रिपोर्ट भरने का अभ्यास भी करवाया गया। सिंगल साइन ऑन पर समय से प्रगति रिपोर्ट अपलोड करने, शाखा में आंतरिक कामकाज में हिंदी का प्रयोग यथा वाउचर निर्माण, रजिस्टरों में हिंदी में प्रविष्टियां, हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर आदि के संबंध में विस्तृत रूप से बताया गया। कम्प्यूटर पर उपलब्ध हिंदी टूल भाषिणी का उपयोग तथा उसकी सहायता से हिंदी में कार्य बढ़ाने की जानकारी भी दी गई।

हमारे बैंक द्वारा चलाई जा रही पत्राचार प्रोत्साहन योजना की जानकारी दी गई तथा समुचित तरीके से रिकार्ड रखने के संबंध में भी बताया गया। विभिन्न बैंकों द्वारा आयोजित अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया गया ।

उपयोगी टिप्पणियां

Acceptable proposal	स्वीकार्य प्रस्ताव
Action at once please	कृपया तुरंत कार्रवाई करें।
As proposed	यथा प्रस्तावित
As recommended	यथा संस्तुत/ सिफारिश के अनुसार
Departmental action is in progress	विभागीय कार्रवाई की जा रही है।
Ensure that rules are properly observed in future	यह सुनिश्चित कर लिया जाए कि भविष्य में नियमों का उचित पालन हो
Explanation may be called	स्पष्टीकरण मांगा जाए
Failing which serious action will be taken	ऐसा न करने पर कठोर कार्रवाई की जाएगी
Dispose the matter within 30 days	30 दिनों के मध्य मामले का निपटान करें
Draft reply is put for approval	उत्तर का मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है
Deterimental to Bank's interest	बैंक के हित में नहीं
Enquiry may be completed and report submitted at an early date	जांच पूरी कर रिपोर्ट शीघ्र प्रस्तुत करें
His request be acceded to	उसका अनुरोध स्वीकार किया जाए
In anticipation of your approval	आपके अनुमोदन की प्रत्याशा में
Issue Order	आदेश जारी करें
It should be kept in view	इसका ध्यान रखें/ रखा जाए
Material facts should not be ignored	महत्वपूर्ण तथ्यों की उपेक्षा न करें
Obtain formal sanction	औपचारिक संस्वीकृति प्राप्त करें
Orders are solicited	आदेश देने की कृपा करें
Papers submitted/put up for perusal	कागज – पत्र अवलोकनार्थ प्रस्तुत
Please appear in person	कृपया स्वयं उपस्थित हों
Precautionary measures are to be taken	एहतियाती/पूर्वोपाय किए जाएं
Stand by arrangements should be made	आपाती व्यवस्थाएं की जाएं
The proposal is quite in order	यह प्रस्ताव बिल्कुल ठीक है
This may be treated as urgent	इसे अत्यावश्यक समझें
To the best of my knowledge and belief	जहां तक मुझे जानकारी और विश्वास है
Unanimously	सर्व सम्मति से
Verified and found correct	सत्यापन किया और ठीक पाया
We have carefully considered your request	हमने आपके अनुरोध पर सावधानीपूर्वक विचार किया है
Within the stipulated time	निर्धारित समय के अंदर
Working Committee	कार्यसमिति
You are authorised for this	आप इसके लिए प्राधिकृत हैं

उप निदेशक कार्यान्वयन उत्तरी क्षेत्र-2 द्वारा राजभाषायी निरीक्षण

उपनिदेशक कार्यान्वयन उत्तरी क्षेत्र – 2, गृह मंत्रालय, भारत सरकार श्री छबिल कुमार मेहेर द्वारा अंचल कार्यालय लखनऊ का राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित निरीक्षण किया गया। उन्होंने कार्यालय द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में किए जा रहे कार्यों की समीक्षा की और उन्हें संतोषजनक बताया।

श्री छबिल कुमार मेहेर ने कार्यालय के स्टॉफ सदस्यों की बैठक भी ली उन्होंने सभी स्टॉफ सदस्यों का व्यक्तिगत रूप से परिचय प्राप्त किया एवं उन्हें राजभाषा हिंदी के संवैधानिक पक्ष की जानकारी दी। बैठक की अध्यक्षता श्री आशुतोष सिंह, अंचल प्रमुख ने की उन्होंने शॉल एवं पौधे से श्री मेहेर का स्वागत किया। अंचल प्रमुख ने यूको बैंक द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी।

इस अवसर पर बैंक द्वारा अंगीकार 'संकल्प राजभाषा 2024-2025' के अंतर्गत बैंक द्वारा आयोजित किए गए कार्यक्रमों पर आधारित संक्षिप्तिका 'संकल्प राजभाषा 2024-25' का विमोचन डॉ छबिल कुमार मेहेर जी ने किया।

लेख

डिजिटल बैंकिंग पारिस्थितिकी तंत्र में इंटरप्राइज़ फ्राड रिस्क मैनेजमेंट और कृत्रिम बुद्धिमत्ता

सौरभ प्रजापति,

वरिष्ठ प्रबंधक,

अंचल कार्यालय

वैश्विक बैंकिंग उद्योग वर्तमान में एक अभूतपूर्व डिजिटल परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। जहाँ एक ओर 'ओपन बैंकिंग' और 'इंस्टेंट पेमेंट्स' ने ग्राहक सुविधा को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया है, वहीं दूसरी ओर इसने वित्तीय अपराधियों के लिए नए द्वार भी खोले हैं। इस जटिल वातावरण में, इंटरप्राइज़ फ्राड रिस्क मैनेजमेंट, (ईएफआरएम) एक व्यापक सुरक्षात्मक ढांचा है। जब इसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की असीमित शक्ति के साथ जोड़ा जाता है, तो यह केवल एक सुरक्षा उपकरण न रहकर बैंक की प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त का आधार बन जाता है।

ईएफआरएम का वैचारिक ढांचा

पारंपरिक सुरक्षा प्रणालियाँ अक्सर 'साइलो' (Silos) में काम करती थीं—अर्थात डेबिट कार्ड विभाग का डेटा नेट बैंकिंग विभाग से अलग होता था। ईएफआरएम इस विखंडन को समाप्त करता है।

- **एकीकृत निगरानी :** ईएफआरएम ग्राहक के सभी इंटरैक्शन बिंदुओं (एटीएम, मोबाइल ऐप, शाखा, कॉल सेंटर) से डेटा एकत्रित करता है ताकि ग्राहक की गतिविधि का एक संपूर्ण '360-डिग्री व्यू' प्राप्त किया जा सके।

प्रक्रियात्मक सुदृढ़ता: यह नीति निर्माण से लेकर, फ्रॉड डिटेक्शन, जांच और रिकवरी तक के पूरे चक्र को प्रबंधित करता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता: सुरक्षा का संवर्धित इंजन

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन द्वारा सीखने (मशीन लर्निंग) पारंपरिक 'नियम-आधारित' प्रणालियों की सीमाओं से परें हैं।

- **एडवांस्ड विसंगति पहचान :** कृत्रिम बुद्धिमत्ता एल्गोरिदम अरबों लेनदेन के ऐतिहासिक डेटा का विश्लेषण करके एक "सामान्य व्यवहार" का मॉडल तैयार करते हैं। किसी भी सूक्ष्म विचलन (जैसे कि असामान्य समय पर लॉग-इन या अज्ञात डिवाइस से बड़ा ट्रांजेक्शन) पर यह तत्काल प्रतिक्रिया देता है।

नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (एनएलपी): बैंक ईएफआरएमका उपयोग अनस्ट्रक्चर्ड डेटा (जैसे ईमेल, चैट लॉग और सोशल मीडिया) को स्कैन करने के लिए करते हैं ताकि 'इनसाइडर थ्रेट' या बाहरी फिशिंग हमलों का पूर्वानुमान लगाया जा सके।

तकनीकी तालमेल और कार्यक्षमता

जब ईएफआरएम और कृत्रिम बुद्धिमत्ता साथ मिलकर कार्य करते हैं, तो बैंकिंग परिचालन में निम्नलिखित क्रांतिकारी परिवर्तन आते हैं:

आयाम	**कृत्रिम बुद्धिमत्ता -एकीकृत ईएफआरएम का प्रभाव**
निर्णय लेने की गति	रीयल-टाइम (मिलीसेकंड में) स्कोरिंग और ब्लॉकिंग।
अनुपालन	केवाईसी एवं धनशोधन विरोधी (एएमएल) नियमों का स्वचालित और सटीक पालन।
फॉल्स पॉजिटिव का प्रबंधन	वैध ग्राहकों के लेनदेन को गलती से रोकने की घटनाओं में 40-60% की कमी।
नेटवर्क ग्राफ विश्लेषण	संदिग्ध खातों के बीच छिपे हुए संबंधों और 'फ्रॉड रिंग्स' की पहचान।

रणनीतिक लाभ और ग्राहक अनुभव

एक पेशेवर बैंकिंग संस्थान के लिए, कृत्रिम बुद्धिमत्ता -संचालित ईएफआरएम केवल हानि रोकने का साधन नहीं है, बल्कि यह **ग्राहक निष्ठा** का एक स्तंभ है।

अदृश्य सुरक्षा: सुरक्षा की परतें इतनी सुव्यवस्थित होती हैं कि ग्राहक को एक सहज अनुभव मिलता है, जबकि बैक एंड पर

अनुकूलक शिक्षा (एडेप्टिव लर्निंग) जैसे-जैसे धोखेबाज अपने तरीके बदलते हैं, **कृत्रिम बुद्धिमत्ता** मॉडल नए डेटा से स्वयं को प्रशिक्षित करते हैं, जिससे बैंक हमेशा अपराधियों से एक कदम आगे रहता है।

भविष्य की चुनौतियाँ और एथिकल कृत्रिम बुद्धिमत्ता

इतनी प्रगति के बावजूद, 'डीपफेक' और 'सिंथेटिक आइडेंटिटी फ्रॉड' जैसी नई चुनौतियाँ सामने आ रही हैं। बैंकों को अब समझाने योग्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता (**Explainable AI (XAI)** की आवश्यकता है, ताकि यह समझा जा सके कि किसी एआई मॉडल ने किसी विशेष लेनदेन को फ्रॉड क्यों माना। इसके अलावा, डेटा संप्रभुता और गोपनीयता के मानकों का पालन करना अनिवार्य है।

संक्षेप में, ईएफआरएम और **कृत्रिम बुद्धिमत्ता** का संगम बैंकिंग सुरक्षा के प्रतिमान को 'संदेह' से बदलकर 'निश्चितता' में ले जा रहा है। यह तकनीक न केवल वित्तीय संस्थानों की बैलेंस शीट की रक्षा करती है, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था के आधार—**'जनता के विश्वास'**—को भी अक्षुण्ण बनाए रखती है। आने वाले दशक में, वे बैंक ही अग्रणी होंगे जो तकनीकी नवाचार और मानवीय निर्णय क्षमता के बीच सटीक संतुलन स्थापित करेंगे।

कविता

क्षणभंगुरता

श्री अविनाश तिवारी

शाखा प्रमुख, महोना

कल जो था वो आज नहीं है,
कल क्या होगा यह किसे पता है,
कली जो कल थी आज पुष्प है,
कल भी यह महकें किसे पता है,
कल था जो बचपन आज तरूणता,
कल रहे चेतना किसे पता है,

कल थी मानवता आज क्रूरता,
कल रहे यह दुनिया किसे पता है,
कल थी जो आस, है आज विश्वास,
कल हो इतिहास किसे पता है,
कल था संताप, है आज मन शांत,
कल हो उल्लास किसे पता है,
कल का पुरुषार्थ, आज यथार्थ,
कल हो निस्वार्थ किसे पता है,
कल थी जो भक्ति, है आज वो शक्ति ,
कल बनेगी मुक्ति किसे पता है।

लेख

सतर्क रहें, जागरूक रहें

श्रीमती अनीता कुमारी
वरिष्ठ प्रबंधक
एस.एस.एम.ई हब लखनऊ

आज के तेज़ी से बदलते हुए युग में सतर्कता और जागरूकता का महत्व बहुत बढ़ गया है। “सतर्क रहें, जागरूक रहें” केवल एक नारा नहीं, बल्कि सुरक्षित और सफल जीवन जीने का मूल मंत्र है। जब व्यक्ति सतर्क और जागरूक होता है, तभी वह स्वयं को, अपने परिवार को और समाज को सुरक्षित रख सकता है।

सतर्कता का अर्थ और महत्व

सतर्कता का अर्थ है हर परिस्थिति में सावधान रहना। इसका मतलब है अपने आसपास होने वाली गतिविधियों पर ध्यान देना और किसी भी संभावित खतरे को समय रहते पहचान लेना। सड़क पर चलते समय यातायात नियमों का पालन करना, अनजान लोगों पर तुरंत भरोसा न करना और अपनी वस्तुओं की सुरक्षा करना सतर्कता के अच्छे उदाहरण हैं। सतर्क व्यक्ति कम गलतियाँ करता है और दुर्घटनाओं से बचा रहता है।

जागरूकता का अर्थ और महत्व

जागरूकता का अर्थ है सही जानकारी और समझ होना। आज के समय में जागरूक रहना बहुत जरूरी है, क्योंकि गलत सूचना और धोखाधड़ी तेजी से फैल रही है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और डिजिटल विषयों के बारे में जानकारी होना हमें सही निर्णय लेने में मदद करता है। जागरूक व्यक्ति अपने अधिकारों और कर्तव्यों को जानता है और समाज में सकारात्मक भूमिका निभाता है।

बैंकिंग और डिजिटल जीवन में सतर्कता

आजकल ऑनलाइन बैंकिंग और डिजिटल भुगतान का चलन बढ़ गया है। ऐसे में हमें अपने एटीएम पिन, ओटीपी, पासवर्ड और बैंक संबंधी जानकारी किसी के साथ साझा नहीं करनी चाहिए। फर्जी कॉल, मैसेज और ई-मेल से सावधान रहना चाहिए। किसी भी लालच या डराने वाली बातों में आकर जल्दबाज़ी में निर्णय नहीं लेना चाहिए। यही सच्ची सतर्कता और जागरूकता है।

युवाओं और समाज की भूमिका

युवा वर्ग देश का भविष्य होता है। यदि युवा सतर्क और जागरूक होंगे, तो समाज स्वतः ही सुरक्षित बनेगा। नशा, साइबर अपराध, अफवाहें और हिंसा जैसी समस्याओं से बचने के लिए युवाओं को सही दिशा में सोचने और कार्य करने की आवश्यकता है। साथ ही समाज में हो रहे गलत कार्यों के विरुद्ध आवाज़ उठाना भी हमारी जिम्मेदारी है।

अंत में कहा जा सकता है कि सतर्कता और जागरूकता जीवन के हर क्षेत्र में आवश्यक हैं। एक सतर्क और जागरूक नागरिक ही सुरक्षित, सशक्त और विकसित समाज का निर्माण कर सकता है। इसलिए हमें हमेशा याद रखना चाहिए—

“सतर्क रहें, जागरूक रहें, सुरक्षित रहें।”

व्यवसाय सितंबर 2025 – शीर्ष शाखाएं

कुल व्यवसाय

क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि
1	1654	मिड कारपोरेट गोमतीनगर	123890.78
2	0046	हज़रतगंज	87595.88
3	0752	आई.टी.कालेज	30763.68
4	0060	लखनऊ विश्वविद्यालय	27717
5	1259	बक्कास	27248.53

चालू जमा

क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि
1	1420	अशोक मार्ग	1503.25
2	0046	हज़रतगंज	1240.79
3	0752	आईटी कालेज	1021.93
4	2395	पत्रकारपुरम	830.58
5	1654	मिड कारपोरेट गोमतीनगर	824.63

बचत जमा

क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि
1	1259	बक्कास	17948.14
2	1946	एलडीए गोमतीनगर	11827.45
3	0060	लखनऊ विश्वविद्यालय	11140.26
4	1849	जलसंस्थान	9735.97
5	0514	चिनहट	8835.62

कासा

क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि
1	1259	बक्कास	18388.42
2	1946	एलडीए गोमतीनगर	12324.6
3	0060	लखनऊ विश्वविद्यालय	11480.11
4	1849	जलसंस्थान	10493.83
5	0514	चिनहट	9165.33

सावधि जमा

क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि
1	0046	हज़रतगंज	58754.95
2	1654	मिड कारपोरेट गोमतीनगर	17468.2
3	0752	आई.टी.कालेज	17148.96
4	0060	लखनऊ विश्वविद्यालय	12071.67
5	1154	बेहसा	11169.96

कुल अग्रिम

क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि
1	1654	मिड कारपोरेट गोमतीनगर	99609.27
2	0046	हज़रतगंज	23161
3	2395	पत्रकारपुरम	8574.58
4	2270	इंदिरानगर	6930.33
5	2281	रायबरेली	6766.53

प्रधान कार्यालय द्वारा राजभाषायी निरीक्षण

श्री आशुतोष सिंह, अंचल प्रमुख लखनऊ श्रीमती हेमलता मुख्य प्रबंधक राजभाषा का स्वागत करते हुए

अंचल कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

अंचल कार्यालय लखनऊ का राजभाषायी निरीक्षण मुख्य प्रबंधक राजभाषा डॉ.हेमलता तांतिया द्वारा 25 सितंबर 2025 को किया गया। उन्होंने अंचल प्रमुख के मार्गदर्शन राजभाषा के प्रगामी प्रयोग की दिशा में किए जा रहे कार्यों की सराहना की एवं अपने बहुमूल्य सुझाव भी दिए। अंचल प्रमुख की अध्यक्षता में इस दौरान कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक भी आयोजित की गई।

हिंदी पखवाड़ा – 2025

लखनऊ अंचल में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन 14 से 28 सितंबर 2025 तक किया गया। 'हिंदी दिवस' कार्यक्रम का आयोजन 16.09.2025 को किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन अंचल प्रमुख श्री आशुतोष सिंह ने किया। सभी स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए उन्होंने हिंदी में कार्य करने केलिए प्रेरित किया उन्होंने हिंदी भाषा के उद्गम, हिंदी भाषा की महत्ता पर अपने उद्गार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा से हम सभी का भावनात्मक जुड़ाव है हमारे मस्तिष्क में पहले हिंदी में ही विचार आते है उसके उपरांत हम उन विचारों को दूसरी भाषा से परिवर्तित करते हैं। बैंक की हिंदी पत्राचार प्रोत्साहन योजना में प्रतिभागिता करने के लिए उन्होंने स्टाफ सदस्यों को प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार एवं हमारे बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी महोदय के संदेशों का पाठ किया गया। उप अंचल प्रमुख श्रीमती निकीता पाण्डेय ने इस अवसर पर सभी स्टाफ सदस्यों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित किया। वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा ने हिंदी पखवाड़ा 2025 के दौरान आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं का विवरण स्टाफ सदस्यों को बताया। अंचल प्रमुख द्वारा सभी को राजभाषा प्रतिज्ञा दिलवाई गई।

श्री आशुतोष सिंह, अंचल प्रमुख लखनऊ स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए

राजभाषा प्रतिज्ञा

प्रतियोगिताओं का आयोजन

इस अवसर पर हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता, राजभाषा सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, बैंकिंग शब्दावली से संबंधित शब्दों का खेल प्रतियोगिता एवं आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सभी स्टाफ सदस्यों ने इस में उत्साह से प्रतिभागिता की। विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

हिंदी पखवाड़ा पुरस्कार वितरण कार्यक्रम

अंचल प्रमुख से पुरस्कार प्राप्त करते विजेतागण

बैंकिंग शब्दावली

Absolute amount	समग्र राशि
Accord and satisfaction	समझौता और तुष्टि
Blue chip Company	विश्वसनीय कंपनी
Boot money	अतिरिक्त मुआवजा
Consolidation	समेकन
Contra entry	प्रति-प्रविष्टि, दुतरफा प्रविष्टि
Core business	मूल व्यवसाय
Estimate	अनुमान, प्राक्कलन
Exchange	शेयर बाज़ार
Execution of deed	विलेख का निष्पादन
Ex-officio	पदेन, पद के नाते
Freezing of funds	निधियों पर रोक लगाना
Funding	निधीयन, निधीकरण
General ledger	प्रधान खाताबही
Going concern	कार्यशील संस्था
Grant on account	पूर्वानुदान, अग्रिम अनुदान
Injunction	व्यादेश
Installation	संस्थापन, प्रतिष्ठापन
Insured amount	बीमाकृत राशि
Lien	धारणाधिकार (प्रलेखों के संदर्भ में) पुनर्ग्रहणाधिकार (प्रशासन के संदर्भ में) ग्रहणाधिकार(देयराशि के अभिग्रहण के संदर्भ में)
Liquidator's account	परिसमापक लेखे
Loan documents	ऋण प्रलेख
Major indicator's	प्रमुख संकेतक
Mala fide	असदभावपूर्वक
Mandatory	अधिदेशी, आज्ञापक
Net contribution	निबल अंशदान
Official amortization	अधिकारिक परिशोधन
Off-site ATM	शाखेतर एटीएम
Paradigm shift	आमूलचूल परिवर्तन
Path-breaking budget	अभिनव बजट
Peer banks	समकक्ष बैंक

यूको कान्ट्रेक्टर योजना

<table>
<tr><th>क्रम</th><th>मानदंड</th><th>विशेषताएं</th></tr>
<tr><td>1</td><td>उद्देश्य</td><td>ठेकेदारों/उप-ठेकेदारों की व्यावसायिक आवश्यकताओं के लिए ओवरड्राफ्ट और सावधि ऋण के रूप में निधि आधारित सुविधा तथा साख पत्र और बैंक गारंटी के रूप में गैर निधि आधारित सुविधा प्रदान करना</td></tr>
<tr><td>2</td><td>पात्रता</td><td>एमएसएमई की परिभाषा के अंतर्गत आने वाले पंजीकृत ठेकेदार, जो सरकार/पीडब्ल्यूडी/पीएसयू एवं प्रतिष्ठित कॉरपोरेट्स की ओर से कार्य करते हैं।
उप-ठेकेदार, बशर्ते मूल अनुबंध में सबलेटिंग की अनुमति हो।
उप-ठेकेदार ए/बी/सी/डी श्रेणी का ठेकेदार होना चाहिए या राज्य सरकार द्वारा स्वीकार्य कोई अन्य श्रेणी ।
उद्यम पंजीकरण प्रमाण पत्र
जीएसटी पंजीकरण</td></tr>
<tr><td>3</td><td>क्रेडिट स्कोर</td><td>न्यूनतम उपभोक्ता सिबिल स्कोर: 650
न्यूनतम सिबिल एमएसएमई रैंक (सीएमआर): सीएमआर -6 (जेडएलसीसी द्वारा सीएमआर -8 तक स्वीकार्य)
यदि स्कोर/रैंक उपलब्ध नहीं है, तो यह लागू नहीं होगा</td></tr>
<tr><td>4</td><td>ऋण की प्रमात्रा</td><td>न्यूनतम: ₹10 लाख से अधिक
अधिकतम: ₹10 करोड</td></tr>
<tr><td>5</td><td>ऋण सुविधाएं</td><td><table>
<tr><th>ऋण सुविधा</th><th>आकलन</th></tr>
<tr><td>ओवरड्राफ्ट (ओडी)</td><td>वार्षिक अनुमानित कारोबार का 25%</td></tr>
<tr><td>सावधि ऋण (टीएल)</td><td>ओवरड्राफ्ट सीमा का अधिकतम 50% अथवा स्थायी परिसंपत्तियों की लागत का 75%, जो भी कम हो</td></tr>
<tr><td>बैंक गारंटी(बीजी)</td><td rowspan="2">ओवरड्राफ्ट सीमा का अधिकतम 50%</td></tr>
<tr><td>साख पत्र (एलसी)</td></tr>
</table></td></tr>
<tr><td>6</td><td>संघटन</td><td>व्यक्ति, एकल स्वामित्व फर्म, साझेदारी फर्म, लिमिटेड लाइबिलिटी पार्टनरशिप (एलएलपी), संयुक्त उपक्रम, निजी/सार्वजनिक लिमिटेड कंपनी</td></tr>
<tr><td>7</td><td>मार्जिन</td><td>सावधि ऋण: न्यूनतम 25% (परिवहन वाहन के लिए न्यूनतम 20%)
बैंक गारंटी: न्यूनतम 15%
विवादित देयताओं के विरुद्ध बीजी के लिए 100% नकद मार्जिन</td></tr>
</table>

8	प्रतिभूति	**प्राथमिक** • संपूर्ण चल संपत्तियों और अचल संपत्तियों का दृष्टिबंधन **संपार्श्विक** • **सरफेसयी** अनुरूप प्रतिभूति, जिसकी वसूल योग्य मूल्य, स्वीकृत सीमा (एफबी + एनएफबी) का 100% हो। • **तरल प्रतिभूति**, जिसका मूल्य स्वीकृत सीमा का 91% हो। • ऋण को सीजीटीएमएसई के "हाइब्रिड सिक्योरिटी" मॉडल के अंतर्गत कवर किया जा सकता है।
9	ब्याज दर	**जहाँ संपार्श्विक सुरक्षा स्वीकृत सीमा का न्यूनतम 100% हो या तरल संपार्श्विक** प्रतिभूति स्वीकृत सीमा का न्यूनतम 91% हो, वहाँ ब्याज दर : **यूको फ़्लोट दर (9.30%) + 0.50% = वर्तमान में 9.80%** **सीजीटीएमएसई के हाइब्रिड मॉडल के अंतर्गत ब्याज दर :** यूको फ़्लोट दर (9.30%) + 1.00% = **वर्तमान में 10.30%** • रणनीतिक व्यावसायिक **छूट अधिकतम 0.50% तक अनुमन्य है।**
10	अन्य विशेषताएं	स्टॉक स्टेटमेंट आवश्यक नहीं है। • स्व-प्रमाणित बुक डेब्ट स्टेटमेंट तिमाही आधार पर आवश्यक है। • मौजूदा उधारकर्ता स्विचओवर के लिए पात्र हैं। • बाहरी क्रेडिट रेटिंग की आवश्यकता नहीं है।

नन्हीं कूची

।

शैफाली मिश्रा पुत्री सुश्री बिंदु मिश्रा की ड्राइंग

स्वतंत्रता दिवस 2025

स्वतंत्रता दिवस 2025 के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए उप महाप्रबंधक एवं

अंचल प्रमुख श्री आशुतोष सिंह

एक टीम, एक स्वप्न

राजभाषा का प्रकाश, बैंक का विकास